SACH KI DASTAK, RNI : UPHIN/2017/75716
वाराणसी से प्रकाशित

वर्ष : 5, अंक : 3, जून 2021
मूल्य : 20 रु.

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

कोरोना के बाद दहकते सवाल?

यायावर साहित्य के महापंडित राहुल सांकृत्यायन

नैनो यूरिया से कृषि परिवर्तन

बंगाल में हिंदुओं की हत्या?

ब्रिटेन में कोरोना कहर

आओ पेड़ लगाए पर्यावरण को बचायें

दीपक आर्य

वरिष्ठ भाजपा नेता
पं दीनदयाल उपाध्याय नगर
जनपद-चन्दौली

कोरोना का टीका अवश्य लगवायें!
कोरोना का टीका अवश्य लगवायें!

रंजन शाह

वरिष्ठ भाजपा नेता
मंडल कार्य समिति सदस्य (भाजपा)
पं दीनदयाल उपाध्याय नगर
जनपद चन्दौली

कोरोना का टीका अवश्य लगवायें!
कोरोना का टीका अवश्य लगवायें!

प्रदीप मौर्या

जिलाध्यक्ष शिक्षा प्रकोष्ठ
अपना दल
जनपद - चन्दौली

संपादकीय

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी को देखने के बाद उसके संक्रमण में आई गिरावट से मन शांत तो हो रहा है लेकिन तीसरी लहर आने की सम्भावना जरूर डरा रही है । इससे निपटने के लिए सरकार द्वारा की जा रही तैयारी एक अच्छा कदम है। कोरोना की दूसरी लहर वास्तव में थम रही है लेकिन बेरोजगारी और महंगाई तीव्र गति से बढ़ती जा रही है। एक तरफ कोविड का भय तो दूसरी तरफ भूख की आग, ऐसे में आदमी करे तो क्या करें? कोई भी आपदा आती है तो उससे लड़ने के लिए सरकार और जनता दोनों का दायित्व बनता है। कोरोना महामारी से त्रस्त जनता का मनोबल बेरोजगारी और महंगाई की मार से टूटता दिखाई दे रहा है।

अजब विडम्बना है ! सरकार महामारी से जनता को सुरक्षित रखने का प्रयास कर रही है, किन्तु बेरोजगारी और मंहगाई के मोर्चे पर लाचार सी दीख रही है। पेट्रोल और डीजल के दाम तेजी से बढ़ रहे हैं जो बढ़ती महंगाई के लिए जिम्मेदार हैं। ऐसे में केंद्र सरकार के जिम्मेदार मंत्री जिन्हें टीम का अहम खिलाड़ी माना जाता है उनका अजीबोगरीब बयान आता है। पेट्रोल डीजल को बहुत दिनों से जी.एस.टी. के दायरे में लाने की मांग चल रही है लेकिन सरकार अभी तक ऐसा नहीं कर पायी । किसान आंदोलन आज भी चल रहा है। सरकार किसानों को संतुष्ट करने में नाकाम रही है। किसान भी अपनी जिद्द पर अड़े हुए हैं। इस विकट काल में कोरोना का मनोवैज्ञानिक असर देश के भविष्य कहे जाने वाले हमारे बच्चों पर भी पड़ा है। इनकी पढ़ाई पूरी तरह लड़खड़ा गयी है। परीक्षाओं का वैकल्पिक तरीका निकाला गया है। यह फैसला कोरोना को देखते हुए लिया गया जो पूरी तरह न्यायोचित है लेकिन इससे वे बच्चे नाराज है जो परीक्षा को लेकर बेजोड़ मेहनत किये थे। जो हाईस्कूल में 98 प्रतिशत लाकर इंटर में और बेहतर करने की उम्मीद पाले थे। वे बच्चे सरकार के फैसले से खुश हैं जिनकी तैयारी नहीं हो पाई थी। वे बिना पढ़े ही पास हो सकते हैं। मेरा अपना मत है कि सरकार को अब पुनः घटते हुए कोरोना को देखते हुए परीक्षा कराने पर पुनर्विचार करना चाहिए।

कई राज्यों में चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में हमें उस पर भी बात करनी होगी। पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात जैसे राज्यों में चुनाव अगले साल के प्रारम्भ में होंगे। आप सोच सकते हैं कि यहाँ मुद्दे क्या होंगे? मुद्दे तो होने चाहिए स्वास्थ्य पर, अस्पतालों के निर्माण पर, बेरोजगारी पर, महंगाई पर। लेकिन हमें नहीं लगता कि इन मुद्दों को लेकर सभी पार्टियां तैयार हैं। मेरी समझ में है कि मुद्दे ये राजनीतिक पार्टियाँ उठाएंगी कोरोना काल में गंगा में बही लाशों पर, टीकाकरण अभियान को जबरन फेल कराने के मुद्दे पर, कोरोना काल में मौतों पर। बस मोदी फेल हम पास, परन्तु यह सकारात्मक कदम नहीं होगा। मुद्दे ऐसे होने चाहिए जिससे युवा वर्ग का भविष्य उज्ज्वल हो। यदि पक्ष व विपक्ष दोनों सकारात्मक पहलू को देखते हुए मुद्दे बनायें और उसे कार्यान्वित करने के लिए प्रेरित हों तभी देश की प्रगति सम्भव है।

मित्रों! आज एक बात मुझे चुभती है। अल्पसंख्यक को लेकर राजनीति करने वाले ये राजनीतिक दल केवल एक वर्ग विशेष को ही अल्पसंख्यक मानते हैं। अलीगढ़ में

पिछले दिनों हुई घटना मुझे झकझोर देती है। जहाँ हिंदुओं को विवाह के लिए अनुमति लेनी पड़े और बाजे गाजे के साथ बारात ले जाने पर जहाँ अल्प संख्यक जातियों की संख्या अधिक है वे हिंदू परिवार वालों के साथ मारपीट करते हैं। पश्चिम बंगाल में भी इसी तरह की राजनीति देखी गई, जहाँ ममता सरकार मूकदर्शक बनी रही। क्या यही न्याय है? वर्ग विशेष की राजनीति करने वाले दल इसे मुद्दों के रूप में नहीं उठाएंगे, क्योंकि उस वर्ग विशेष का वोट लेना है। उन राजनीतिक दलों से जो अल्पसंख्यक की राजनीति करते हैं उनसे एक सवाल है कि अल्पसंख्यक की परिभाषा को ये राजनीतिक दल कश्मीर में बदल क्यों देते हैं। क्या वहाँ हिंदू अल्पसंख्यक नहीं हैं? वहां तो अल्पसंख्यक का साथ न देकर बहुसंख्यक का साथ देते हैं। कांग्रेस के दिग्गजों में से एक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे नेताजी कहते है कि धारा 370 की उनकी सरकार आने पर वापसी होगी। क्या यही राजनीति है? ऐसी राजनीति को बदलने की आवश्यकता है।

प्रसिद्ध साहित्यकार महा पंडित राहुल सांकृत्यायन के विषय में आज के राजनीति को देखते हुए बात करना अनिवार्य है । वे विश्व भ्रमण पर निकले थे । उन्होंने इस से एक निष्कर्ष भी निकाला था कि जो अच्छी चीज है उसे अपनाना चाहिए चाहे वह दूसरे देश की क्यों न हो। प्रकृति के विषय में भी उनके अलग ही विचार थे। वे कहते हैं कि यदि आप प्रकृति से कुछ लेते हो तो उनका 100 प्रतिशत वापस लौटाना भी होगा। क्या वर्तमान में हम लोग ऐसा करते हैं? यदि ऐसा करते तो करोना काल में ऑक्सीजन की कमी नहीं होती और जो मौतें हुई हैं उनकी संख्या में भी काफी कमी रही होती। ब्रिटेन में पुनः कोरोना के संक्रमित लोगों की संख्या में इजाफा हुआ है ये क्यों हुआ इस विषय पर अध्ययन की आवश्यकता है क्योंकि वहाँ पर कोरोना की वैक्सीनेशन कार्यक्रम भी तेजी से चला था।और काफी लोगों को वैक्सीन भी लगाई जा चुकी है।

अन्त में आप सभी लोगों से आग्रह है कि जिन्होनें वैक्सीन नहीं ली है वे सपरिवार वैंक्सीन अवश्य लें।

ब्रजेश कुमार

श्रीराधा मोहनजी को रूप निहारो

सूरदास जी

(1478 ईसवी-1581)

भाषा : ब्रज भाषा विधाएँ : कविता

श्रीराधा मोहनजी को रूप निहारो ॥
छोटे भैया कृष्ण बडे बलदाऊं चंद्रवंश उजिआरो ॥
मोर मुगुट मकराकृत कुंडल पितांबर पट बारो ॥
हलधर गीरधर मदन मनोहर जशोमति नंद दुलारी ॥
शंख चक्र गदा पद्म विराजे असुरन भंजन हारो ॥
जमुनाके नीर तीर धेनु चरावे वोढे कामर कारो ॥
निरमल जल जमुनाजी को किनो नागनाथ लीयो कारो ॥
इंद्र कोप चढे व्रज उपर नखपर गीरवर धारो ॥
कनक सिंहासन जदुवर बैठे कोटि भानु उजिआरो।
माता जशोदा करत आरती बार बार बलिहारो ॥
सूरदास हरि को रूप निहारे जीवन प्रान हमारे ॥

■■

कोरोना के बाद दहकते सवाल

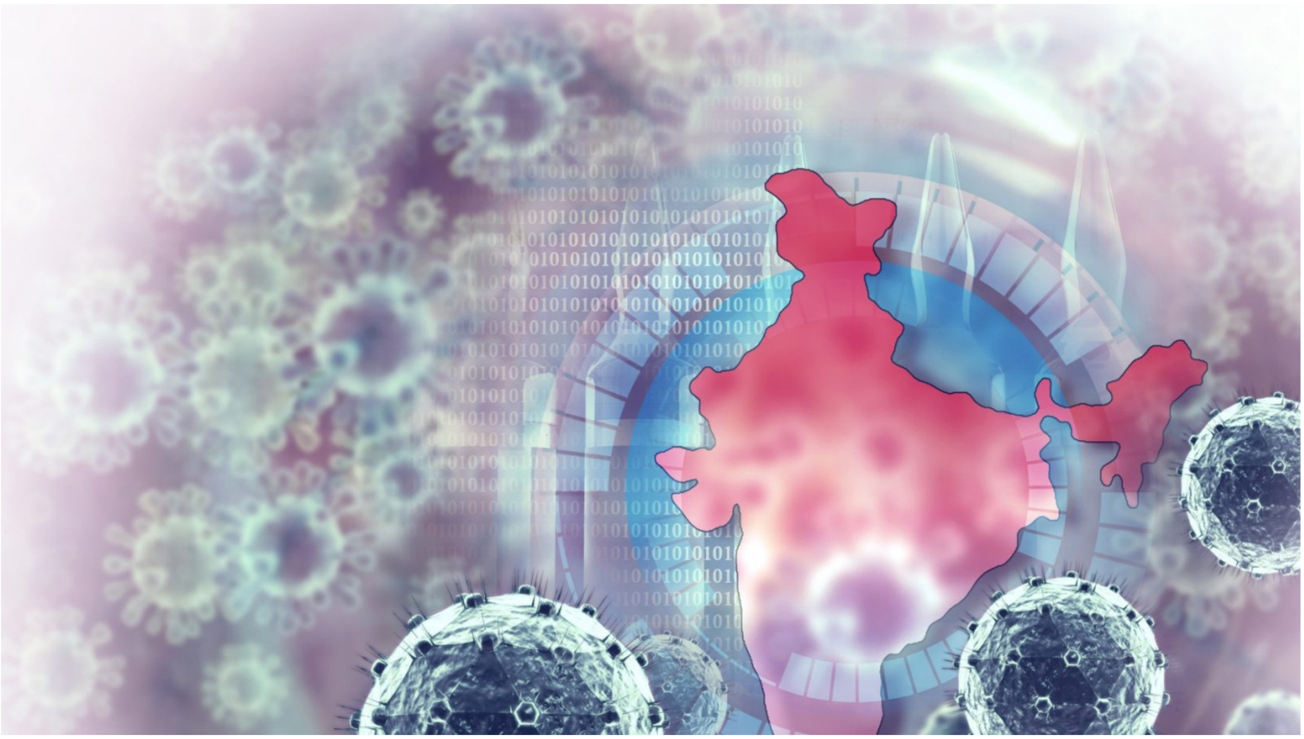

ब्रजेश कुमार
संपादक सच की दस्तक

कोरोनकाल एक बुरे सपने की तरह प्रत्येक वर्ष लौट रहा है और पूरे देश के आर्थिक जगत को बुरी तरह बर्बाद कर रहा है। वर्तमान समय में इसी का परिणाम है कि हमारी जी.डी.पी माइनस में है।देश के आर्थिक रणनीतिकारों की सोच है कि एक आर्थिक शक्ति के रूप में भारत विश्व में स्थान बनाये लेकिन क्या उनकी सोच से देश आर्थिक शक्ति बन सकता है? जवाब है कि बिल्कुल नही इसके लिए लोगों का आर्थिक रूप से मजबूत होना बहुत जरूरी है।

कोविड के खत्म होते अब सब को चिंता हो रही कि हमारी जी. डी. पी कैसे पॉजिटिव होगी? लेकिन क्या किसी ने ये सोचा कि देश का आम - गरीब आदमी कोरोना के बाद क्या करेगा? कोरोना के कम होते ही गरीब का पेट कैसे भरेगा? ये प्रश्न इसलिए उठना स्वाभाविक है क्योंकि कोरोना काल में गरीब की नौकरी चली गयी। ऊपर से महंगाई की मार ।भूख तो कम होने वाली नही। ऐसे केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तरफ से दीपावली तक राशन फ्री देने का फैसला लिया है।ये तो सही है लेकिन क्या केवल इनसे काम चल जाएगा? इनसे परिवार चलेगा? इस पर गहन मंत्रणा किया जाना चाहिए।हमारे देश में ये सम्भव है ही नही क्योंकि यहां पर वोट की राजनीति हावी है।जब कोई जनहितकारी काम, केंद्र या राज्य सरकार द्वारा किये जाते है तो विपक्ष कार्य को संपादित नही होने देता है।सब क्रेडिट लेने के फिराक में

लगे रहते हैं । वैक्सीन तक को बीजेपी की वैक्सीन कह डाला गया कि नहीं लगवायेगें। कोरोनकाल में कितनी मौतें हुई उनका हिसाब लेना उनका अधिकार है लेकिन इसके लिए विपक्ष कितना जिम्मेदार रहा इसका जबाब नही मिलता।कोरोना काल में काफी लोगो की नौकरियां चली गयीं। फैक्ट्रियों ने भी लोगों को निकाल दिया। क्या किसी पूंजीपति राजनीतिक दल के नेताओ ने रोजगार सृजन के लिए व्यवस्था की? ध्यान देने योग्य बातें है कि सभी दलों में पूंजीपति है जिनके पास अनगिनत फैक्ट्री है रोजगार देने की क्षमता है क्या किसी पी. एम. से इन लोगों ने गम्भीरता पूर्वक बात की? क्या सारी जिम्मेदारी केवल केंद्र की है? आइये! आप को बताते है सरकारी आंकड़े कोरोनाकाल में क्या रहे है।

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी के आंकड़ों के मुताबिक, 16 मई को खत्म हुए सप्ताह के दौरान बेरोजगारी दर बढ़ कर 14.34 फीसदी हो गई। पिछले एक साल का यह सबसे अधिकतम स्तर है।बेरोजगारी दर 49 हफ्तों के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है।पिछले अप्रैल महीने की अपेक्षा यह दोगुने स्तर पर है। ये आंकड़े डराने वाले है ,सबसे ज्यादा भय भी लगता है। ग्रामीण क्षेत्रों पर यदि ध्यान दिया जाए तो

ग्रामीण इलाकों में भी बेरोजगारी तेजी से बढ़ रही है।

आंकड़ों के मुताबिक कोरोना के चलते देशभर में लगे लॉकडाउन के बाद करीब अप्रैल में 75 लाख से ज्यादा लोगों ने अपनी नौकरी गंवाई। ग्रामीण इलाकों में भी बेरोजगारी दर की रफ्तार तेज हो गई है। ग्रामीण इलाकों में पिछले साल की तुलना में ये दर 100 फीसदी बढ़कर 17.51 फीसदी पर पहुंच गई है। जानकारों के मुताबिक रोजगार के मोर्चे पर स्थिति चुनौतीपूर्ण रहेगी। अब दहकता सवाल यह है कि

ऐसे में क्या होगा आमजनों का? इस पर विचार करना चाहिए। जो फैक्टरी में काम करते थे उनकी नौकरी छूट गयी या निकाल दिया गया। मजदूर डर के मारे लॉकडाउन एक बार पुनः सड़क के रास्ते घर लौट गए। जो आने के बाद पूरी तरह बेरोजगार हो गए।

इस महामारी से पहले जो युवा रोजगार के लिए उत्साहित थे लग रहा था उन्हें नौकरी मिल जाएगी लेकिन भविष्य में उनकी नौकरी उन्हें मिलती है की नही कोविड के बाद भगवान ही जाने। कोरोना महामारी में इस रोग से जीतने का मूलमंत्र रहा था योग।योग से इम्यून क्षमता में काफी वृद्धि होती है।21 जून विश्व योग दिवस है लेकिन सरकार से कोई पूछे कि प्राथमिक से लेकर उच्च तक कितने शिक्षण संस्थानों में योगा शिक्षक है।ऐसे में केवल कोरम पूरा पूरा किया जा रहा है।जो संजीवनी बनकर कोविड काल बनी रही।कोरोना के बाद योग गुरूओं और योगा स्टूडेंट्स को जॉब का अवसर मिल पायेगा ये कहना भी मुश्किल है। वहीं

बीपीएड व्यायाम शिक्षक को आज तक नौकरी नहीं मिल सकी। उनकी ट्रैनिंग का खर्च और मेहनत सबकुछ व्यर्थ रहा। बीएड वालों को छोड़कर शिक्षक मित्र भर लिये गये। यह टीस बीएड प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक घुट कर रहे गये।

इसके अलावा जुलाई माह में टेट व सुपर टेट के एग्जाम होने वाले थे बड़ी संख्या में शिक्षकों की भर्ती होने वाली थी अब ये ठंडे बस्ते में चली गयी है। बड़े शौक से बेरोजगार युवाओं ने टीजीटी व पीजीटी के फॉर्म भी भरे थे अब इनका क्या होगा ये भगवान ही मालिक है। बेरोजगारी आलम यह है कि रिसर्च स्कॉलर चपरासी की नौकरी जो संविदा पर रहती है उसको पाने के लिए ऐडी छोटी एक किये है।ऐसे आयी ये वैश्विक महामारी ने तो इनके मंसूबों पर पानी फेर दिया है।गरीब रोटी के लिए मोहताज होता दिख रहा।गांव की सरकार बन गयी है लेकिन काम शुरू नही हो पाया है।जिससे ग्रामीण अंचल में शहर से घर लौटे लोग बेरोजगार हो गए है।

सरकार को भी सूझ नही रहा कि क्या करे?

यदि महंगाई की बात करे तो हर चीज़ को भाव आसमान छू रहे हैं।कोरोनाकाल में कोरोना की पहली लहर के दौरान और अब दूसरी लहर में एक से डेढ़ गुना महंगाई बढ़ी है। कोरोनाकाल में एक वर्ष की तुलना की जाय तो खाद्य सामग्री के दामों में भारी वृद्धि हुई है। अरहर, मल्का, उड़द, काला

चना, राजमा समेत अन्य दालों के दामों में वृद्धि हुई है।जबकि सरसों के तेल और रिफाइंड की कीमतों में भारी उछाल देखने को मिला है। बाजार से मिली जानकारी के मुताबिक अरहर की दाल कोरोना की पहली लहर के दौरान 80 रुपये प्रति किलो थी, जो अब 110 रुपये प्रति किलो हो गयी है। इससे गृहणियों का रसोई का बजट पूरी तरह बिगड़ गया है। वो भी तब जब कोरोना काल में लोग आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं। यही नहीं, पेट्रो पदार्थों की कीमतें भी लगातार बढ़ती जा रही हैं। डीजल पेट्रोल के दाम बढ़ने से गाड़ी भाड़ा भी बढ़ा है। जिससे महंगाई तेजी से बढने लगी है। गत वर्ष कोरोना काल में मई माह में पेट्रोल 78.51 रुपये प्रति लीटर था। जबकि वर्तमान में 94.04 रुपये प्रति लीटर है। डीजल के दाम गत वर्ष जून में 68.31 रुपये प्रति लीटर थे, जो अब लगभग 90 रुपये प्रति लीटर है। व्यापारीयों ने बताया कि महंगाई लगातार बढ़ रही है। पेट्रो पदार्थों की कीमतें बढ़ने से माल भाड़ा में वृद्धि हुई है जिससे कीमतें लगातार बढ़ती जा रही हैं।लगाम तो लगी नही रहा है। केंद्र

सरकार के पेट्रोलियम मंत्री ने कहा है कि लोगों को राशन व अन्य योजना वैक्सीनेशन का कार्य के लिए ये बढ़ना स्वाभाविक है।लेकिन आम जनता अब यह पूछ रही है कि यदि महंगाई बढ़ गयी तो राशन का क्या फायदा?केवल रोटी व चावल मुफ्त में देने से भोजन हो जाएगा।इसके लिए क्या नीति होगी वो नही दिख रही है। कोरोना के दूसरी लहर थमने के बाद तीसरी लहर भी आने की सम्भावना है ऐसे में सरकार कह रही है बहुत तेजी से बच्चों के लिए अस्पताल बनाये जा रहे है आक्सीजन की व्यवस्था और अधिक की जा रही लेकिन जो सरकार कह रही वो जमीन पर दिख नही रहा।कोरोना ने आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर कर दी है कि सरकार गरीबों के लिए कोई विशेष अभियान नही चला रही है।

कोरोना का जिक्र हो और बच्चों के पढ़ाई पर जिक्र न हो ऐसा हो ही नही सकता। अजब गजब सरकार भी है कोरोना की पहली लहर है पूरी पढ़ाई बंद हो गयी।स्कूल, कालेज, कोचिंग बन्द।सबसे बड़ा नुकसान यदि हुआ तो वो शिक्षा जगत को।इससे भी प्राइवेट शिक्षकों की नौकरी गयी वे बेरोजगार हो गए।बड़े बड़े शिक्षण संस्थाओं के मालिकों ने इन्हें जबर्दस्ती निकाल दिया जिससे उन्हें सैलरी न देनी पड़े। कोरोना की रफ्तार तो थमती दिख रही तो युवा रोजगार की उम्मीदें बढ़ गयी है लेकिन कोरोना के बाद स्कूल कालेज के मालिक जबरदस्त आर्थिक शोषण कर सकते है।जो बड़े सैलरी पर शिक्षक है उसे बाहर का रास्ता दिखलाने की तैयारी है क्योंकि इन मालिकों को इनके बदले कम सैलरी पर बेरोजगार युवक मिल जाएगा जिससे उनको एक अच्छा शिक्षक भी मिलेगा बदले में पैसे भी कम देने पड़ेंगे।यदि तीसरी लहर सचमुच दस्तक देती है तो एक बार पुनः बेरोजगारों के पेट पर लात मारी जाएगी। ऑनलाइन शिक्षण को लागू कर कइयों की छुट्टी भी की जाएगी जो उन शिक्षण संस्थाओं के मालिकों की सोच भी है।सरकार का ऐसे लोगो के संदर्भ में क्या कदम होगा ये देखना है?

■■

यायावरी(विशेष) विश्व पथिक

राहुल सांस्कृत्यायन

कृष्णकान्त श्रीवास्तव
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी

'सैर कर दुनिया की गाफिल,जिंदगानी फिर कहाँ

ज़िंदगी गर कुछ रही,तो नौजवानी फिर कहाँ।'

यायावरी(घुमक्कड़ शास्त्र) एक जीवन दर्शन भी है। हिंदी यात्रा साहित्य के पितामह राहुल सांकृत्यायन जीवन पर्यंत दुनिया की सैर करते रहे ।उन्होंने ज्ञान को सफर -सागर में कश्ती की तरह लिया, न कि बोझ की तरह। यात्राएं केवल भूगोल की नहीं अपितु मन की हैं,अवचेतन की हैं, चेतना के स्थानांतरण की हैं।

किसी एक भाषा' हिंदी 'को विविध रूप से इतना नहीं समृद्ध किया होगा जितना अकेले राहुल ने।

आजमगढ़ में एक बालक के रूप में जन्म लेता है, घर से निकल पड़ता है।और जीवन भर भागता फिरता है।हिंदी वांङमय प्रेमचंद ' निराला ''आदि से ही नहीं बनता, उसमें सांस्कृतयान जी की भूमिका अनन्य है। अंग्रेजी साहित्य केवल शेक्सपियर से नहीं, न्यूटन का विज्ञान पर और एडम स्मिथ का अर्थशास्त्र पर......। इनकी संचायिता का सांगोपांग अध्ययन मेरी सीमा से परे है।

जो भागा नहीं, दुनिया को

बदलने में लगा रहा.........

जीवन वृत

जन्म-9 अप्रैल 1893 ग्राम--आजमगढ़

गोत्र-सं सांकृत्यं

पिता- गोवर्धन पांडेय माता-कुलवंती देवी

शिक्षा-आजमगढ़ में मिडिल तक, आगरा से अरबी फारसी की पढ़ाई और लाहौर तथा काशी में संस्कृत

विवाह-11 वर्ष में अस्वीकार्य विवाह

विशेष-- राहुल सुखदायी घेराबंदी से भी भाग खड़ा हुआ।'घुमक्कड़ शास्त्र' लिखा, जिसमें 'यायावरी एक दर्शन' भी है।क्या ?क्यों? कैसे? का उत्तर पहली यात्रा कोलकाता की ओर की। उस जमाने में पुरवइया लोग बंगाल ही जाया करते थे। गीत गाय आ जाते थे-- हमारी सबसे बड़ी दुश्मन' रोलिया' है, जो हमारी पिया को परदेस ले जाती है। राहुल उस दौर में जाने लगा जिसमें उसका कुछ भी मानो व्यक्तिगत था ही नहीं। न घर,न रिश्ते, न चाहत।

बस मित्र थे।सनातनी से आर्य समाजी फिर बौद्ध और अंततः कम्युनिस्ट लेकिन उनकी आत्मा में राष्ट्रभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी।

मिलन और बिछोह

रूस में लेनिनग्राद में वे प्रोफेसर नियुक्त हुए।सुंदर युवती 'लोला' से मुलाकात और मोहब्बत हुई शादी भी हुई।पर यायावर वहां से भी चल दिया।

विछुरत एक प्राण हरि लेही'.....

कुछ ही दिनों बाद' लोला' गर्भवती हुई।बाद में ईगोर राहुलोविच नामक बेटा पैदा हुआ। दोनों के प्रति असीम प्यार उसके जीवन का सबसे बड़ा रागात्मक आलंब बना रहा। राहुल जा चुके थे।उन्हें जब पिता बनने की सूचना मिली तो उन्होंने लिखा--

' पुत्र जन्म की प्रसन्नता होनी चाहिए क्योंकि पुत्र ही आदमी पुनर्जन्म और परलोक है'

बाद में राहुल थकने लगे थे।अध्यवसाय के अतिरेक के कारण पहले देहरादून मैं फिर दार्जिलिंग में स्थिरता और स्थायित्व देने के लिए कमला को संघ ने बना लिया' कमला ' से विवाह भी कर लिया। 2 बच्चे भी हुए जया और जेता।पर समरसता की कमी बनी रही। राहुल तपा हुआ तन जवाब देने लगा। उनका मस्तिष्क अब मरणासन्न संकेत देने लगा।उन्हें सोवियत यूनियन भी इलाज के लिए जाना पड़ा।बीमारी स्मृति लोप के कारण अंततः जीवन का अंत हो गया।

राहुल का प्रकृति प्रेम

आप्रवाक्यों से उद्‌घृत---

'आत्मनः प्रतिकुलानी परेशां न समाचरेत'

है पृथ्वी जिस गंध को औषधि और जलधारण ,जिसका गंधर्व और अप्सराएं सेवन करते हैं, मुझे उस गंध से सुरक्षित बना।

'जो पृथ्वी शीलाभूमि, पत्थर और ध्रम के रूपों को धारण करती है, ऐसी पृथ्वी' हिरण्यवक्षा' है।मैं उसे नमस्कार करता हूं।'

सच पूछिए तो राहुल जी का मन मस्तिष्क सृष्टि विधा से परिपूर्ण था।वे पृथ्वी को अपनी मां मानकर प्यार करते थे। यात्रा करते रहे, पुस्तक लिखते रहे।रूस केश्चेवर्त्सकी और इटली की 'तूची' नामक विद्वानों की दृष्टि तिब्बत पर लगी थी। राहुल जी ने प्रच्छन्न तरीकों का इस्तेमाल कर तिब्बत से न केवल बहुमूल्य ग्रंथ -राशि उबारा, अपितु अज्ञात टरो इन 'कागानिटो' क्षेत्र को भी प्रकाशित किया।1935 में यूरोप गए ,फिर रूस और चीन की यात्रा की।

धर्म-दर्शन

विभिन्न धर्मों की विधि विधान के बावजूद जब 'दर्शन'' नहीं हुआ तो वे धतूरा खाकर आत्महत्या करने का निश्चय किया।उन्होंने लिखा है हमारे देश में ऐतिहासिक दृष्टिकोण बनने में बहुत सी बाधाएं हैं। धर्म के प्रति अत्यंत आग्रह सबसे बड़ी बाधा है।धर्म की गुलामी से बदतर गुलामी और क्या है?

उन्होंने धर्म के पाखंड को नकारा।

जीवन दृष्टि

मित्रता:- वे कहते थे 'घनिष्ठता' मेरी कमजोरी है। जो व्यक्ति अपने मां-बाप की मृत्यु पर नहीं रोया, वह तिब्बत में' कुतिया 'की मृत्यु पर फूट-फूट कर रोया। जेल में भी लोकोतथान में लगे रहते थे।

उनका विचार था कि दुनिया से जितना लिया जाता है उसका सौ गुना

चुकाना चाहिए।

यायावरी

1912-13 -- परसा मठ

1913-14-- दक्षिण भारत

1922 -बक्सर जेल में

1923-25 हजारीबाग जेल में

1927-29 - श्रीलंका में संस्कृत के अध्यापक ,बौद्ध साहित्य का अध्ययन

1932 -33 इंग्लैंड और यूरोप

1934 - दूसरी तिब्बत यात्रा

1935 - जापान, कोरिया ,मंचूरिया ,सोवियत संघ तथा ईरान

1936- तीसरी तिब्बत यात्रा

1937-सोवियत संघ

1938 - पुनः तिब्बत (इस यात्रा के दौरान सोवियत रूस में इगोर राहुल विच का जन्म)

1939- किसान संघर्ष, अमवारी-सत्याग्रह (जेल में)

1940-42 हजारीबाग जेल

1944-47 सोवियत संघ ने प्रध्यापक

1947- हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभापति

1952-मसूरी में अपना घर

1953-पुत्री जय का जन्म

1955-पुत्र जेला का जन्म

1958-चीन में चार मास

यात्रा का अंतिम छोर

सांस्कृत्यायन जी को जीवन के अंतिम दिनों में स्मृति लोग की बीमारी ने घेर लिया इलाज के लिए मास्को ले जाया गया ।14 अप्रैल 1963 को अपनी अंतिम सांस दार्जिलिंग में ली।

सांस्कृत्यायन के विचार

'दुनिया से जितना लिया जाता है उसका सौ गुना चुकाना चाहिए'

प्रमुख रचनायें

1 उपन्यास

बाइसवीं सदी, जीने के लिए ,सिंह सेनापति ,जय यौथेय, भागो नहीं, दुनिया बदलो, मधुर स्वप्न, राजस्थानी रनिवास, विस्मृत यात्री, दिवोदास निराले हीरे की खोज,

2-कथा साहित्य

सतमी के बच्चे, वोल्गासे गंगा, बहुरंगी मधुधुरी, कवैला की कथा

3-नाटक

नयकी दुनिया, मेहरारून के दुर्दश,जपनिया राछछ, जनमनवा के हारे निहचय,देश रच्छक,दुनमुन नेता,ई हमार लड़ाई, जोंक

4-दर्शन

वैज्ञानिक भौतिकवाद ,दर्शन -दिग्दर्शन, बौद्ध दर्शन

5-इतिहास

विश्व की रूपरेखा(1942)मध्य एशिया का इतिहास, ऋग्वैदिक व आर्य ,अकबर

6-साहित्य इतिहास

पाली साहित्य का इतिहास ,हिंदी काव्यधारा

7-धर्म

इस्लाम धर्म की रूपरेखा बुद्ध चर्या

8-आत्मकथा

मेरा जीवन यात्रा (पांच खंडों में)

9-समाजशास्त्र

मानव समाज 1942

10- जीवनी

17 विभिन्न विषयों पर, सोवियत कम्युनिस्ट विचार पर कुछ किताबें

पाथेय

रविंद्रनाथ ठाकुर ,पृथ्वी कवि के गानों को आइए आत्मसात करें---

इतनी बड़ी पृथ्वी को कितना भर जानता हूं? मनुष्य की कितनी कीर्ति हैं? कितनी नदियां ?कितने पहाड़ ?कितने समुंदर? कितने रेगिस्तान ?

जाने कितने जीव हैं जिन्हें नहीं जानता !

जाने कितने पेड़ हैं जीने नहीं पहचानता !

यह सब अगोचर रह गए ।विश्व का आयोजन विशाल है !

बेचैनी में उन ग्रंथों को अच्छे उत्साह

से पढ़ता हूं

जिसमें भ्रमण वृतांत है।

जहां भी चित्रमय वर्ण की वाणी पाता हूं।

चुन कर ले आता हूं।अपने मन के इस ज्ञान दरिद्र को जहां तक भर रखता हूं।

भिक्षारो प्राप्त धन से भर लेता हूं ------

मैं पृथ्वी का कवि हूं.......

रविंद्र नाथ ठाकुर

मेरी आत्मीय अभिव्यक्ति

मैं कृष्णकांत श्रीवास्तव कवि हृदय अपनी आत्मीय अभिव्यक्ति में अंग्रेजी के विश्व विख्यात कवि की स्काईलार्क प्रति से निम्न पंक्तियों को उद्द्धुत कर रहा हूं.........

'उस आनंद का आधा हिस्सा मुझे दे

जिसकी जानकारी तेरे मस्तिष्क को है,

ऐसा सुरतालयुक्त पागलपन मेरे अधरों से प्रवाहित हो की संसार ध्यान मग्न हो सुनता ही रह जाए---

जैसा मैं इस समय सुन रहा हूं'........ ■■

पुनरावृत्ति की अनमोल रातें

आकांक्षा सक्सेना
न्यूज ऐडीटर सच की दस्तक

सम्मानित साथियों! आज मैं कोई आरोप-प्रत्यारोप वाली स्वार्थी, रक्तरंजित राजनीति की बात नहीं करूंगी । क्योंकि महान भारतवर्ष विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और आज की जनता बहुत जागरूक है जो आने वाले चुनावों में न्याय करेगी। आज कोरोना ने सिर्फ़ शरीरों को ही संक्रमित करके नहीं मारा बल्कि खून के रिश्तों को भी संक्रमित करके कलंकित कर दिया है। वहीं अजनबियों द्वारा, की गई मदद से लोगों को पुनर्जीवन मिला है। भयावहता का आलम यह है कि आज देशवासी, बिजली से भी घातक करेंट के तारों जैसी निर्दयी परिस्थितियों पर झूल रहे हैं। कोरोना के बाद हर किसी का जीवन चिंताओं से घिर गया है। आम आदमी किस तरह दो वक्त की रोटी की जुगाड़ कर रहा है यह बात सिर्फ़ वही आदमी जानता है। जिसके पास जितनी बचत थी वह भी समाप्ति की ओर है। हर गरीब और मध्यमवर्गीय परिवार सिर्फ़ परमात्मा की तरफ देखकर जिंदा है। हाँ, सच कहतीं हूं कि मैं सकारात्मक लिखूंगी पर सकारात्मक के दबाव में झूठ को

पोषण नहीं दूंगी । सच तो यह है कि आज का मानव सिर्फ़ धन को ही परमात्मा समझ चुका है। धन की अंधी दौड़ ने उसे अमानुष बना दिया है। धन की दौड़ में मानव अपने सभी रिश्तों सम्बन्धों को रौंदता हुआ दौड़ा चला जा रहा है। यह धन की अंतहीन, उबाऊ और व्यर्थ दौड़ है। जब आपने सिर्फ़ धन कमाया और आशीर्वादों को खो दिया। यह तब महसूस होता है जब एक धनवान व्यक्ति अस्पताल के बैड पर रिश्तों से रिक्त बिल्कुल अकेला पड़ा हो। ऐसी घोर रिक्तता में वह अपनी आखों में सम्पूर्ण जीवन की गल्तियों की पुनरावृत्ति होते देख रहा पर अब बहुत देर हो चुकी है । हम लोग हर रात अपनी बुरी आदतों को छोड़ने के बजाय केवल उसकी पुनरावृत्ति ही करते हैं। हम मानव, लालसा और गर्व के बीच निर्णायक बनकर नये-नये कर्मों की पुनरावृति करने में लगे रहते हैं । फिर भी निराशा हाथ लगती है और निराशा आंशिक मौत है। यह कड़वा सत्य है कि मानव जितना पढ़ा है वह उतना ही ज्यादा अधिक हिस्सों में बंटा है । वह मजबूत मानव होते हुए भी वासनापूर्ति हेतु साधारण जानवर प्रवृति से प्रतिस्पर्धा कर रहा है। आप मानव हो। किसी के स्तर पर जाने की जरूरत नहीं। आप नौटंकी में शामिल मत हो जहां हर दृश्य पर नये कपड़े की मांग है। आपने अपने कपड़ों को इतना कीमती समझ लिया है कि स्वंय , कपड़ों से भी सस्ते दिखने लगे हो। हमेशा शरीर रूपी कपड़े पर ध्यान देते हो। कभी अंतरात्मा की आवाज़ सुनो।जो आपसे हर जीव के प्रति सिर्फ़ प्रेम की मांग करती है। प्रेम को भी वासना से जोड़ कर प्रेम रूपी शब्द को अपवित्र कर दिया गया है। कुछ लड़कियां, गल्तियों की पुनरावृत्ति करतीं चली जा रही हैं और शादी के बजाय उनकी धोखे से हत्या की जा रही हैं। अब सवाल उठता है कि आखिर! यह कैसे और क्यों हो रहा है? इसका जवाब है परिवार में वास्तविक प्रेम का अभाव।संगठित परिवार का शोर ही तो दिल का सुकून है। आजकल एकाकी परिवार हैं जिन्हें किसी से कोई मतलब नहीं। आजकल हर दर्द भरे अंत के गर्भ में पाखंडी दोस्त और रिश्तेदार पाया गया है।दुर्भाग्यवश सोसलमीडिया पर मिला उस अनजान दोस्त से बुरा क्या होगा जो आपके सारे रहस्य जानता है। सारी कमजोरियां जानता है और जब आपके बीच छोटी सी भी लडाई हो जाये तो वो आपके खिलाफ़ ही आपके द्वारा मिलीं जानकारियों का अपनी सुविधानुसार इस्तेमाल करने लगता है और पूरी दुनिया में पर्दाफाश कर आपको जीते जी मार डालता है। लड़कियों की समस्या यह है कि आपकी वजह से कोई नाराज न हो। पर कभी-कभी आप स्वंय उनकी आंसुओं की वजह बन जाते हो और कभी आपकी करूणा का पात्र आपका दुश्मन बन जाता है। यही जीवन का जहरीला रहस्य हैं एक दुःस्वप्न की तरह। इसके अलावा सरकारी नौकरी, धन वैभव विलासपूर्ण फिल्मों में दिखाई गयी जिंदगी को लोग सच मान लेते हैं और कई बार जल्दी सबकुछ पा लेने की होड़ से भी लोग घर से भागते हैं। बात यह है कि कभी-कभी ईश्वर की दी हुई मानव बुद्धि की कोशिकाओं में इस तरह आपसी द्वंद होता है और प्रकृति के कानूनों का उल्लंघन होता है कि जागरूक मानव भी पुनरावृत्ति चक्र जाल में उलझ जाता है और किसी षड्यंत्रकारी मकड़ी - मकड़े का शिकार बन जाता है। मेरी प्रिय बहनों! भाइयों! यह प्रेम नहीं है। जाग जाओ और जिसे मोहब्बत चाहिये वह पहले परवाह करने की कला सीखे, आदत डाले। यह दौर निम्न पंक्ति पर रेंग रहा है कि शुरूआत कभी सच्चाई नहीं देती और अंत सबकुछ उजागर कर देता है पर तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।जिंदगी सबकुछ अनुभव करने के लिए लंबी नहीं है और न ही सब कुछ याद रखने के लिए छोटी है लेकिन खूबसूरत है अगर हम इसका मूल्य जानते हैं तो सोचो! इंतजार करना कष्टप्रद है तो क्या गलत जगह जाने वाली गाड़ी में बैठ जाओगी। इतनी जल्दबाजी तो मूर्खता है। सच्ची मोहब्बत अलग चीज है जो हैवान को भी इंसान बना दे। आज गोरा रंग सुन्दरता का पैमाना है और मोहब्बत का भी। मानव यह भूल गया कि स्नेह और दया उम्र से परे का अनंत अक्षत अक्षय सौंदर्य है। सच तो यह है कि हर इंसान, इंसान बन जाये अगर उसे सच्ची मोहब्बत छू जाये। यह मिलावट का दौर है समझदारी से जियो। गलत इसलिए हो रहा कि हम सबक नहीं ले रहे। आप पूछेगें कि सच्ची मोहब्बत कैसे पहचाने? बस इतना जान लो कि जो आपकी उदासी से न डरा वो आपके लायक नहीं। सबकुछ जानने के बाद भी हम नहीं सुधरते। हम इंसान अपने कर्मों में यही अखंडित पुनरावृति कर रहे हैं।मेरी बहनों!आप सबकुछ खो सकती हो पर अपनी मर्यादा और गरिमा को मत खो क्योंकि मुआवज़ा सब को दिया जा सकता है पर गरिमा और मर्यादा को

नहीं।दिल की इच्छाओं के ऊपर आत्मा की मर्यादा को स्थान दो। हास्यास्पद है कि हर दिल जँवा रहने के लिए मंहगी दवाइयां का सेवन कर रहा है। वह पत्तों को सींच रहे हैं और जड़ों को भूल चुके हैं। अतीत का तकिया हमें बुढापे की अनिद्रा नामक रहस्मयी बेहोशी सौंप रहा है और हम अनजान हैं क्यों परिपक्वता में कमी है। परिपक्वता का मतलब.... चुप रहा जैसे समझा ही नहीं और नजरंदाज किया जैसे देखा ही नहीं। हमारी कर्मों की पुनरावृत्ति की गवाह हमारी कष्टप्रद रातें हैं जो हमसे कभी झूठ नहीं बोलतीं। हम मानव पुनरावृत्ति और अतिशयोक्ति करने में बहुत होशियार हैं। मानव हर चीज़ की अतिश्योक्ति करता है सिवाय अपनी गलतियों के चर्चा के। अपने कुकर्म भी चर्चा के लायक होते तो हम एक इंसान होते।यकीनन मनुष्यता का उल्लघन होता है जब कोई उसे बदल देता है पर विडम्बना यह है कि बदलने वाला कभी वापस नहीं आता। अच्छे कर्मों के पदचिन्हों पर हमें चलना होता है पर हम लकीर के फकीर बन जाते हैं। हम इतने आलसी कि नये पदचिह्न बनाने पर विचार नहीं आता और भरोसा नहीं होता। जबकि महान विभूतियां जो कड़वे समाज में चीनी के दाने समान मोहक थीं । आखिर! वह भी बिना बहाने बनाने वाले विकास प्रेमी मानव ही थे। क्या हमारे ही तरह? क्या हमने सकारात्मक धारणाओं की अपने जीवन में पुनरावृत्ति करने पर विचार किया? हम मानवों ने केवल सरल ओछे कर्म को चुना कि मनचाही वस्तु न मिली, कोई इच्छा पूर्ण ना हुई, किसी ने मर्द को औरत कहकर व्यंग कर दिया, किन्नर बोल दिया तो आत्महत्या कर ली। मेरे भाई! यही गहरी हार है कि तुम मान गये कि तुम हार गये। कड़वा सत्य है कि समाज से लड़ना व्यर्थ है क्योंकि स्त्री का मर्दानी बनना समाज को स्वीकार होता है पर पुरूष का नारीत्व में ढलना असहनीय होता है। इसलिए जिंदगी से पलायन व्यर्थ जब तक चीजें हमारे मन-मस्तिष्क में मौजूद हैं । समझो कि दुनिया में हर चीज की प्राप्ति की चेष्टा व्यर्थ है क्योंकि यह मृत्युलोक है कोई स्वर्ग का कल्पवृक्ष नहीं। यहां परमात्मा की मर्जी चलती है आपकी नहीं। आत्महत्या करना सरल है पर जीवन को हर परिस्थिति में जीना बहुत कठिन। हम मानव की प्रवृत्ति हमेशा सरल कर्म की ओर बढ़ने की होती जा रही है जो हमें बहुत कठोर बना रही है। हमारी सम्पूर्ण शिक्षा केवल लिखें हुए दूसरों के अनुभवों का संग्रह किये गया शहद के समान है। यह ज्ञान हमें सरकारी पद प्रतिष्ठा और धन दिला सकता है।किन्तु धन और पद हमारे जीवन - मरण के रहस्य का नहीं बता सकता। हम अपने मृत परिजन को जीवित नहीं कर सकते। हम अपने मृत परिजन से बात तक नहीं कर सकते। मरने के बाद क्या होता है? यह हम नहीं जानते? भगवान होते हैं पर हम हमारे अनुभव से कुछ नहीं जानते। हमारे शरीर में आत्मा है और हम उसे नहीं जानते। वह कहां से आती है कहां को जाती। हम उस आलौकिक दुनिया के विषय में अनपढ़ हैं। हम लोग इतनी जल्दबाजी में हैं कि बिना हैलमेट लगाये सड़क पर मोटरसाइकिल पर हवाई जहाज की रफ्तार पकड़ लेते हैं। क्या हम खुद को पुनर्जीवित कर सकेगें? फिर हम इतनी जल्दबाज़ी में क्यों हैं? हम लोग दुनिया रूपी सपने में फंसे हजारों सपनों की रहस्यमय दुनिया में उलझे पड़े हैं। नुकसान यह है कि क्या यह धन की दौड़ हमें कभी ईश्वर से मिलने देगी? क्या हमें ईश्वर का ख्याल आता है? हमें ईश्वर की याद तब आती है जिस दिन हमें खाना नहीं मिलता अथवा अच्छा खाना नहीं मिलता।हम इंसान बेहद खुदगर्ज़ है क्योंकि दुख हमें तुरंत आस्तिक बना देते हैं। याद रखो! खुद को अनदेखा करोगे तो एक दिन खुद से ही हारोगे। आत्ममूल्याकंन करो। जीवन चुनौती स्वीकार कर लो कि आप चाहें जितने भी अच्छे कर्म क्यों न करें फिर भी शत्रुता आपको भेंट में मिलती ही है॥यही आपका संघर्ष है ।यही जिंदगी का सत्य है। इसलिए बेवजह किसी से भी किसी भी तरह की निराशा के लिए तैयार रहो। मालूम हो कि आपके जीवन में दो लोग आपके जीवन की किताब का अंतिम पृष्ठ पढ़ने और देखने में दिलचस्पी रखते हैं।एक आपसे प्यार करने वाले और दूसरे आपसे घृणा करने वाले। भारत में प्रेम पर बहुत लिखा गया है। वसुधैव कुटुम्बकम यानि सम्पूर्ण विश्व हमारा परिवार है की बात तक कही गई। जब पडोसी देश हमला कर दें तो प्रतिउत्तर का भी प्रचंड इतिहास रहा है । पड़ोसी देश भी नेताओं की देन है जिसे हम सब भुगत रहे हैं। अब हम लोग हर परिस्थिति को सुधार नहीं सकते परन्तु स्वंय का बचाव करते हुए उन चीजों से किनारा कर सकते हैं जो हमारे स्वभाव को क्रूर व अनैतिक बनातीं हैं। पूरी दुनिया प्रेम से जुड़ी रहे क्योंकि दिल से जुड़ी एक धमनी अगर कट जाये तब क्या जीवन सम्भव है। पूरे जीवन स्टोर किये गये शब्दों में कोई जीवित शब्द भी होगा।

हमें जड़ता और निर्जीवता में जीवंतता और मानवता तलाशनी होगी वरना सबकुछ खो जायेगा। पड़ोसी देश आतंकवाद पर विचार करें कि यदि अगर आपके कहे हर शब्द आपकी त्वचा पर अंकित हो जायें तब क्या आप अपना बयान बदल सकेगें या तब भी इसे बीमारी का नाम देकर असत्य की गाड़ी खीचेगें क्योंकि असत्य रूपी गाड़ी भी बिना सत्य के ईंधन के नहीं रेंग सकती। शायद आपको रेंगना पसंद है दहाड़ना नहीं।सच यह है कि हमारी बेढ़ंग़ी दिनचर्या हमें कभी सर्वशक्तिमान ईश्वर से मिलने नहीं देगी। आप ईश्वर खोज नहीं परन्तु याद तो करो। ईश्वर के नाम का जाप आपको दिव्य अहसास देगा। परन्तु आप अपने लिखे हुए अनुभवों को किसी पर जबरन थोपने की कोशिश मत करो। क्योंकि यह जिंदगी रूपी आपकी कहानी है जिसका सम्पूर्ण विवरण सिर्फ़ आपके पास है। दूसरे इसे अनुभव नहीं कर सकते और जबरन स्वीकार नहीं कर सकते। इसलिये शांत रहो। सत्य लिखते रहो, बिना टिप्पणी आये बिना लोगों से उम्मीद लगाये सद्कर्म करते रहो। एकाएक आपको संसार से अरूचि होने लगेगी। आपको दिव्य की चंदन की सुगंध महसूस होगी। तो डरना मत क्योंकि आपकी प्रार्थना और साधना सफल हुई है। आपका मन करेगा कि मौन रहें । तो बिल्कुल मौन के अलावा आत्मा को कुछ नहीं थका सकता। साधक प्रभुप्रेमी भक्त कुत्तों सहित हर जीव के लिए दयालु है। कुत्ते रात्रि में जब भौंकते हैं तो निगेटिव इनर्जी को महसूस करके भौंकते है और जब भगवान या उनके देवदूत गुजरते हैं तो पूरी प्रकृति अपनी सारी सुगंध सुवास प्रेम लुटाने को आतुर हो जाती है और कुत्ते आदि जीव जन्तु भावविभोर हो नाचने मुस्कुराने गुनगुनाने व मदहोश हो जमीन पर लोटने व अपार सुकून भरी नींद सो जाते हैं। यह मेरा निजि अनुभव है। ईश्वरीय ऊर्जा की मौजूदगी सुगंधित सुकून है और अन्य ऊर्जा की मौजूदगी अपार बैचेनी का घोतक है। और यह अहसास का राज़ स्वंय अहसास से भारी है। अंत में आप दुनिया से अकेले ही लौटेंगे इसलिए संलग्नक की तरह मत जियें। इतिहास साक्षी है कि जिसने भी ईमानदारी और सच्चाई से स्वंय को जानने की ललक पैदा की है वो उसे प्राप्त अवश्य हुआ है। जितनी ज्यादा तड़प उतनी ही जल्दी प्रगट।हाँ, कभी-कभी बेहद उच्चतम स्तर की जागरूकता और महानतम सोच व्यक्ति को सामाजिक कम बल्कि अंतर्मुखी ज्यादा बनाती है। इस समय जीवन में उन लोगों से सावधान रहना चाहिए जिनके दो चेहरे होते हैं और मुसीबत यह है कि दोनों ही चेहरे एक दूसरे से ज्यादा भयावह। इसलिए लोगों की पसंद और नापसंद आपकी महानता पर प्रभाव नहीं डालतीं। इसलिए सोसलमीडिया के लाईक और कमेन्टस को पैमाना मत बनाये, न समझे। आपको किसी के स्तर पर जाने की जरूरत नहीं आप जो हैं वो आप स्वंय भलीभाँति जानते हैं। एक शेर कभी कुत्तों की रेस में नहीं दोड़ेगा, वह वहां से पहले ही निकल जायेगा। कुत्ते सोच रहे हैं कि शेर डर गया। सच तो यही है कि शेर क्या चीज़ यह उसे बताने की जरूरत नहीं। उसे कुछ भी साबित करने की जरूरत नहीं। आप जानवरों की दौड़ को नकार कर दूर बैठे हुए भी देवता की तरह तेजोमय ही रहेगें। लोगों की पसंद और नापसंद आपके व्यक्तित्व को प्रभावित नहीं कर सकती। इसलिए खुद को खुद के लिए संवारे। खुद की संतुष्टि में संतुष्ट रहें। आप से बेहतर कोई नहीं। आप परमात्मा की एकमात्र अनुपम कृति आप जैसा दूसरा नहीं। खुद से करें अनंत प्रेम। मानव सत्य से दूर हुआ तो वह व्यभिचारी हो गया। हम मानवों को अपने उन्नत भविष्य की उन्नत पीढ़ियों के लिए अपनी असभ्यतापूर्ण पुनरावृत्ति की खौफ़नाक रातों और अतिउन्मादी अतिशयोक्ति के दिनों को अपने सद्कर्मों की क्रांति से परिवर्तित करना होगा। इस विश्वास के साथ कि हमें अपने सद्कर्मों की पुनरावृत्ति, ध्यानावस्था में किसी रात हमें हमारे जीवन तत्वों के पार के गूढ़ रहस्यों के सारे ताले खोल कर हमें सत्य का ज्ञान करा दे। यही रात्रि ध्यान में आत्मविश्लेषण का विशेष पल ही हमारी उन्नत पुनरावृत्ति की अनमोल रातों की मांग है।

■■

कोरोना वैक्सीन के साइड इफेक्ट से राहत पाने के उपाय

मृदुला श्रीमाली
(उत्तर प्रदेश हैड)

पूरी दुनिया इस समय कोरोना महामारी की मार झेल रही है। करोड़ों लोगों ने अपनी जान इस वायरस के कारण गवां दी है। लाखों गंभीर रुप से बीमार हो चुके हैं। समय-समय पर ये वायरस और भी प्रभावी होता जा रहा है। वायरस के नये-स्ट्रेन भी कहर बरपा रहे हैं। इस महामारी से बचने का अब तक एक ही इलाज खोजा गया है वो है टीकाकरण। कोरोना की वैक्सीन बन चुकी है और सभी देश इस वैक्सीन को तेजी के साथ जनता तक पहुंचा रहे हैं। साधारण तौर पर देखा गा है कि वैक्सीन लगने के बार शरीर पर कई तरह के असर दिखायी देते हैं। कोविड -19 टीकाकरण के दौरान आपको दो डोज लगायी जाएगी पहला शॉट प्राप्त करने के बाद कई लोगों को इंजेक्शन लगने वाली जगह दर्द होता है। वैक्सीन के प्रभाव के अनुसार कई लोगों को थकान, बुखार, सिरदर्द, शरीर में दर्द, मतली और दर्द का अनुभव हो सकता है। हालांकि कुछ लोगों को टीकाकरण के बाद एक भी साइड इफेक्ट दिखाई नहीं दे सकता है। तो ऐसा क्यों है कि कुछ लोगों को कोविड -19 टीका लेने के के बाद दुष्प्रभाव होते हैं और कुछ को नहीं?जब मानव शरीर पहली बार किसी प्रतिजन के संपर्क में आता है, तो प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रतिक्रिया करने और उस प्रतिजन के लिए विशिष्ट एंटीबॉडी का उत्पादन करने में समय लगता है। इस दौरान व्यक्ति के बीमार होने की आशंका रहती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) 'एंटीजन' को एक रोगज़नक़ के उप-भाग के रूप में परिभाषित करता है जो एंटीबॉडी के गठन

का कारण बनता है। इसके अलावा, टीकाकरण के बाद रोगज़नक़ के प्रतिजन के जवाब में उत्पादित एंटीबॉडी प्रतिरक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यदि आपको किसी भी खुराक के एक या दो दिन बाद कुछ भी महसूस नहीं होता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि टीका काम नहीं कर रहा है। एपी रिपोर्ट में कहा गया है कि वैक्सीन शॉट्स किसी की प्रतिरक्षा प्रणाली के दूसरे भाग को भी गति प्रदान करते हैं, जो एंटीबॉडी का उत्पादन करके वायरस से वास्तविक सुरक्षा प्रदान करेगा।अमेरिकी एजेंसी सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) के अनुसार, लोगों को उस हाथ पर दर्द, लालिमा और सूजन का अनुभव हो सकता है जहां उन्होंने टीका लगाया था। अन्य दुष्प्रभावों में थकान, सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, ठंड लगना, बुखार, मतली शामिल हैं। जैसे ही प्रतिरक्षा प्रणाली सक्रिय होती है, यह कभी-कभी लिम्फ नोड्स में अस्थायी सूजन का कारण बनती है। महिलाओं को कोविड -19 टीकाकरण से पहले नियमित मैमोग्राम शेड्यूल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि सूजन वाले नोड को कैंसर होने से बचाया जा सके।

कोविड वैंकसीन साइड इफेक्ट से राहत पाने के उपाय -

टीकाकरण के बाद किसी भी दर्द या परेशानी का अनुभव होने पर इबुप्रोफेन, एसिटामिनोफेन, एस्पिरिन या एंटीहिस्टामाइन जैसी ओवर-द-काउंटर दवा लेने के बारे में अपने डॉक्टर से बात करनी चाहिए।

सीडीसी का कहना है, 'साइड इफेक्ट को रोकने की कोशिश के उद्देश्य से टीकाकरण से पहले इन दवाओं को लेने की अनुशंसा नहीं की जाती है।'

दर्द और परेशानी को कम करने के लिए इंजेक्शन की जगह पर, एक साफ, ठंडा और गीला वॉशक्लॉथ लगा सकता है या अपनी बांह का व्यायाम कर सकते है।

बुखार से राहत पाने के लिए बहुत सारे तरल पदार्थ पीना चाहिए और हल्के कपड़े पहनना चाहिए।

इन दुष्प्रभावों के कारण दैनिक गतिविधियों को करने में कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन घबराने की जरूरत नहीं है क्योंकि ये कुछ दिनों में दूर हो जाएंगे।

■■

हम सब मदद कर सकते हैं

परिवारों को फिर से साथ लाने में।

वैक्सीन लगवाएं।

नैनो यूरिया से कृषि परिवर्तन

दुनिया भर के किसानों के लिए दुनिया का पहला नैनो यूरिया लिक्विड इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड (इफको) द्वारा 31 मई, 2021 को प्रस्तुत किया गया था। इफको ने 31 मई, 2021 को भारत में ऑनलाइन-ऑफलाइन मोड में आयोजित अपनी 50वीं वार्षिक आम सभा के दौरान यह बड़ा खुलासा किया।

नैनो यूरिया क्या है?

फसलों के पोषक तत्वों की दक्षता में सुधार के लिए नैनो-तकनीक से उत्पादित यूरिया को नैनो यूरिया कहा जाता है. यह नैनो यूरिया पारंपरिक तरल यूरिया की जगह लेगा और यह अपनी (यूरिया की) आवश्यकता को कम से कम 50 प्रतिशत तक कम कर सकता है.

नैनो यूरिया लिक्विड का लाभ क्या है?

जहां परंपरागत यूरिया पौधों को नाइट्रोजन पहुंचाने में 30-40इ प्रभावी सिद्ध हुयी है वहीं नैनो यूरिया लिक्विड 80इ से ऊपर प्रभावी हुयी है। नैनो यूरिया में मौजूद नाइट्रोजन फसलों की आवश्यकताओं को प्रभावी तरीके से पूरी

कर सकता है और इस तरह फसल पैदावार में 8इ की वृद्धि कर सकता है। कंपनी का कहना है कि नैनो यूरिया लिक्विड कितना प्रभावी है, यह सिद्ध करने के लिए देश भर के 11,000 से अधिक किसानों के खेतों में 94 से अधिक फसलों पर परीक्षण किया।इफको के अनुसार, भूमिगत जल की गुणवत्ता पर भी इस नैनो यूरिया लिक्विड का सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, जो जलवायु परिवर्तन और सतत विकास पर प्रभाव के साथ ग्लोबल वार्मिंग में कमी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

यह महत्वपूर्ण क्यों है?

इस नैनो यूरिया लिक्विड की शुरूआत महत्वपूर्ण है क्योंकि किसानों द्वारा इसका उपयोग मिट्टी में यूरिया के अतिरिक्त उपयोग को कम करके संतुलित पोषण कार्यक्रम को बढ़ावा देगा।

नैनो यूरिया की कीमत कितनी होगी?

यह नैनो यूरिया लिक्विड किफ़ायती होगा क्योंकि यह सस्ता होगा और इससे किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी।

नैनो यूरिया में 500 मिलीलीटर की बोतल में 40,000 पीपीएम नाइट्रोजन होता है, जो पारंपरिक यूरिया के एक बैग द्वारा प्रदान किए गए नाइट्रोजन पोषक तत्व के प्रभाव के बराबर है।

किसानों के लिए नैनो यूरिया की 500 मिलीलीटर की बोतल की कीमत 240 रुपये होगी, जो पारंपरिक यूरिया के एक बैग की कीमत से 10 प्रतिशत कम है।

प्रभावकारिता परीक्षण-

इफको ने नैनो यूरिया की प्रभावशीलता का परीक्षण करने के लिए पूरे भारत में 94 से अधिक फसलों पर लगभग 11,000 किसान क्षेत्र परीक्षण किए थे। हाल ही में देश भर में 94 फसलों पर परीक्षण किए गए, जिसमें उपज में औसतन 08 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है।

प्रोडक्शन एंड रोलआउट

इफको ने यह सूचित किया है कि, इस नैनो यूरिया लिक्विड का उत्पादन जून, 2021 तक शुरू हो जाएगा, इसके बाद जल्द ही नैनो यूरिया लिक्विड की वाणिज्यिक बिक्री शुरू हो जाएगी।

यह नैनो यूरिया इफको के ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर बिक्री के अलावा, मुख्य रूप से सहकारी बिक्री और विपणन चैनल के माध्यम से किसानों को उपलब्ध होगा।

जम्मू कश्मीर के किसानों में खुशी की लहर है। क्योंकि पहली बार स्थानीय किसानों को लिक्विड नैनो यूरिया का इस्तेमाल करने का अवसर मिलने जा रहा है। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के हस्तक्षेप से गुजरात से 15000 बोतल लिक्विड नैनो यूरिया मंगवाया गया है, जो परंरागत यूरिया के 675 मीट्रिक टन के बराबर है। उपराज्यपाल ने इफको (इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड) को जम्मू कश्मीर में लिक्विड नैनो यूरिया उत्पादन का एक बड़ा सयंत्र स्थापित करने के लिए भी आमंत्रित किया है। उन्होंने कहा कि इसके लिए प्रदेश सरकार सभी प्रकार से मदद करेगी।

उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने मंगलवार को वर्चुल मोड पर कलोल, गुजरात स्थित इफको के नैनो यूरिया सयंत्र से जम्मू कश्मीर के लिए लिक्विड यूरिया की पहली खेप को हरी झंडी दिखाई। इस मौके पर उपराज्यपाल ने कहा कि जल्द ही जम्मू कश्मीर में कृषि क्रांति का असर चारों तरफ नजर आएगा। उन्होंने कहा कि 30 हजार किसानों को 65 करोड़ रुपये मूल्य के अत्याधुनिक कृषि उपकरण और 91 करोड़ की लागत से 25 हजार किसानों को सिंचाई सुविधा प्रदान की जाएगी। उन्होंने इफको के प्रबंध निदेशक डा. यूएस अवस्थी व उनके साथियों को विश्व का पहला लिक्विड नैनो यूरिया विकसित तैयार करने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि इससे न सिर्फ फसलों का उत्पादन बल्कि मौसम के कारण फसलों का होने वाली क्षति पर भी काबू पाया गया है।

15000 बोतल नैनो यूरिया 675 मीट्रक टन यूरिया के बराबर : कलोल, गुजरात से जम्मू कश्मीर के लिए रवाना हुई लिक्विड नैनो यूरिया की 15000 बोतल 675 मीट्रिक टन पंरपरागत यूरिया के बराबर है। जम्मू और कश्मीर संभाग के किसानों में बराबरी के आधार पर 7500-7500 बोतल लिक्विड नैनो यूरिया बांटा जाएगा।

सस्ता है नैनो यूरिया : उपराज्यपाल ने कहा कि नैनो यूरिया के इस्तमाल से कृषि लागत घटेगी। इससे सब्सिडी की जरूरत भी नहीं पड़ेगी और सरकार इस तरह 27 हजार करोड़ रुपये बचाएगी और किसानों को भी 28 हजार करोड़ का लाभ पहुंचाएगी।

■■

'बाढ़ के बहाने.....'

कई बार किसी घटना, किसी दृश्य से हम इतने प्रभावित होते हैं कि वह जब-न-तब स्मृति पटल पर दस्तक दे देता है। एक घटना है बचपन की, जो आज अनायास याद आई और मैं उसे कलमबद्ध करने बैठ गई।

उन दिनों गर्मियों में भी हमारे गांव की नदी गोमती लबालब भरी रहती थी और बाढ़ के दिनों में तो पूछना ही क्या! नदी के दोनों पाट दूर तक नदी में समा जाते थे और नदी स्वयं बाढ़ में डूब जाती थी। कौन सा पानी बाढ़ का है और कौन सा नदी का अपना,अलग करना मुश्किल ही नहीं, असंभव होता था। जिनके घर नदी के किनारे थे, बाढ़ को लेकर चिंतित होते थे किंतु बच्चों के लिए बाढ़ का दृश्य कुतूहल होता था। पशु, छप्पर, जलकुंभियों की कतार, सब ले कर नदी शान से बहती थी। जल अवश्य मटमैला हो जाता था, उसके गर्व में कोई कमी नहीं होती।

हमारे गांव के हिस्से में आई नदी के किनारे दूर तक बांसों का झुरमुट था जो बरसात में पूरा डूब जाता था। नदी जब अपने उफान पर होती तो अपने द्वारा लाया हुआ बहुत सा सामान बंसवारी में छिपा देती और जब उतरती अपनी लूट की सामग्री वहीं भूल जाती।

एक बार तीन युवा लड़कियों की लाशें पानी के साथ बहती हुई आईं और

डॉक्टर विद्या सिंह
देहरादून

बंसवारी में फंस गईं। पूरे गांव में सनसनी फैल गई। अन्य गांवों के लोग भी यह दृश्य देखने आए। बच्चों को ऐसे दृश्य देखने की मनाही थी किंतु घात लगाकर हम चारों पक्की सहेलियां भी देख आईं। वह दृश्य देखकर हमारी आंखें फटी रह गईं।

उन तीनों ने साड़ी पहन रखी थी, जो अब उनके फूले हुए शरीर से चिपक कर शरीर का ही भाग लग रही थी। उन्होंने अपने पैर एक रस्सी से एक- दूसरे से बांधे हुए थे। महीनों वह दृश्य हमारे ज़ेहन पर हावी रहा। पुलिस आई थी और लाशों को पोस्टमार्टम के लिए ले गई थी। ज्ञात हुआ था कि तीनों लड़कियां नरकटा गांव की थीं, जो हमारे गांव के पश्चिम में पड़ता था । उनकी आत्महत्या का रहस्य, रहस्य ही रह गया। उन्होंने आत्महत्या की या उनकी हत्या की गई, ज्ञात न हो सका।

उस समय वह हमारे लिए महज़ एक दृश्य था किंतु आज सोचती हूं, तो बहुत से सवाल मन में उगते हैं। ऐसी कौन सी मजबूरी थी कि तीनों को, जो निश्चित रूप से सहेलियां रही होंगी, आत्महत्या के लिए विवश होना पड़ा ।

बहुत दिनों बाद, तीन बहनों की पंखे से लटक कर आत्महत्या का एक अन्य समाचार अखबार में पढ़ा था। पिता दहेज देने में असमर्थ थे अतः लड़कियों का विवाह नहीं कर पा रहे थे। उन्हें चिंता मुक्त करने के लिए लड़कियों ने यह रास्ता चुना था। इसके लिए हम किसे दोष दें ? क्यों एक लड़की, विवाह में एक पुरुष से जुड़कर, अपने जीवन की सार्थकता ढूंढ़ती है ? कुंवारी रहकर, परिवार की, समाज की, देश की सेवा कर सकती है, ऐसे संस्कार हम अपनी लड़कियों को कब दे पाएंगे?

इसी क्रम में एम.ए.पूर्वार्द्ध की एक छात्रा की आत्महत्या याद आ रही है । वह अत्यंत संभावना शील छात्रा थी। लंबी छरहरी काया, बड़ी-बड़ी बोलती आंखें, कक्षा में पूछे गए हर प्रश्न का उत्तर देने को तत्पर (गलत हो या सही),वह एक मुखर छात्रा थी। उसने एस.आई. की लिखित परीक्षा पास कर ली थी और उम्मीद थी कि साक्षात्कार में अवश्य चुन ली जाएगी।

अचानक एक दिन सुबह- सुबह उसकी सहेली का मेरे पास फ़ोन आया

'मैम मीना (बदला हुआ नाम) ने आत्महत्या कर ली।'

'सही कह रही हो?' मेरे विस्मय की सीमा नहीं थी।

'बिल्कुल सही मैम! उसके भाई का फ़ोन आया था। मैं वहीं जा रही हूं।'

सुदूर पहाड़ों से और दूरस्थ प्रदेशों से बड़ी संख्या में (जब तक अन्य प्रदेशों के लिए कोटा निर्धारित नहीं था) छात्राएं, उच्च शिक्षा प्राप्त करने देहरादून आती हैं। चूंकि हमारा कॉलेज सिर्फ लड़कियों के लिए था, अभिभावक उन्हें हॉस्टल में छोड़ कर बेफिक्र हो जाते थे। मणिपुर तथा जम्मू कश्मीर से भी बहुत लड़कियां आती थीं। मीना के साथ उसका छोटा भाई भी था अतः वह हॉस्टल में नहीं , कमरा लेकर शहर में रहती थी ।

'कुछ कारण पता चला उसने क्यों की आत्महत्या?'

' कुछ बॉयफ्रेंड का मामला था मैम। उसने उससे शादी करने का वादा किया था किंतु अब वह दूसरी लड़की को पसंद करने लगा था।'

मीना की आत्महत्या, एक शिक्षक के रूप में मुझे अपनी विफलता लगी। हम शिक्षक अपने बच्चों में, इतना भी विश्वास क्यों नहीं भर पाते कि वे जीवन में आए उतार-चढ़ाव को सहजता से स्वीकार कर सकें?

समस्या का समाधान हमें ही ढूंढना होगा।

■■

'अति सर्वत्र वर्जयेत'

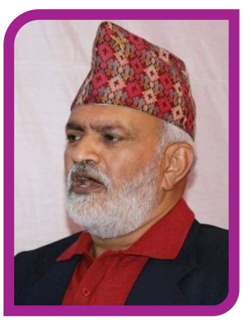

प्रो. वीरेंद्र 'शम्मी'
देहरादून

इस अभूतपूर्व त्रासदी , महामारी के भयावह समय में जहां देश में पहले से ही बहुत से अनावश्यक क्रिया कलाप और अनर्गल प्रलाप चल रहे थे , वहां एक और अनावश्यक विवाद बाबा रामदेव के बयान से उत्पन्न हो गया है। यह तो वह समय है जब हमें अपनी प्राथमिकताओं को निश्चित कर महामारी को नियंत्रित करने के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक योजनाबद्ध रणनीति के अन्तर्गत कठोर परिश्रम करना चाहिए था। विभिन्न वर्गों द्वारा , जिनमें विशेष रूप से चिकित्सा से जुड़े सभी लोग, पुलिस और दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित करने में लगे लोग सम्मिलित हैं , अपनी जान हथेली पर रखकर इस कार्य को किया जा रहा है।

'योग, आयुर्वेद और भारतीय जीवन पद्धति ' मानव जाति की अमूल्य थाती है जिस पर हम सभी को निश्चित रूप से गर्व होना चाहिए। मेरा भी इन सबमें विश्वास है। बाबा रामदेव को यह श्रेय तो जाना ही चाहिए कि आदिकाल से चले आ रहे हमारे ज्ञान की इस विरासत को उन्होंने संवारने और संजोने के साथ-साथ इसे लोकप्रिय और जनोपयोगी बनाने में अथक परिश्रम किया है और शून्य से प्रारंभ कर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को गम्भीर चुनौती भी दी है। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से लाखों लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया है , औषधीय पौधों की फसल के माध्यम से असंख्य

किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारने में योगदान दिया है। हम पसंद करें या ना करें लेकिन पतंजलि देश विदेश में एक जाना पहचाना 'ब्रांड' तो बन ही गया है। संभवतः बड़बोलेपन या भावातिरेक के कारण वो एक ऐसा बयान दे बैठे (संभवतः फोन से कोई मैसेज पढा है) जो शायद उनका मन्तव्य ना रहा हो।

मैं यह भी स्वीकार करता हूं कि महामारी के इस एक सवा वर्ष में हमारे दादी-नानी के टोटकों और आयुर्वेदिक काढों ने न सिर्फ संक्रमण से लोगों को बचाया है बल्कि इस गंभीर संकट के समय में उन्हें अति आवश्यक मनोवैज्ञानिक सुरक्षा एवं मानसिक स्वास्थ्य भी प्रदान किया है। हमें निर्विवाद रूप से यह भी स्वीकार करना चाहिए कि बाबा ने आयुर्वेद के क्षेत्र में वैज्ञानिक शोध को बढ़ावा दिया है जो कि सैंकड़ों वर्षों से उपेक्षित पडी थी। बाबा ने दवा उत्पादन में भी आधुनिक मशीनों एवं मानकों को भी बढ़ावा दिया है।

जिस महामारी ने लाखों लोगों के साथ साथ सेवा कार्यो में दिन रात लगे हजारों डाक्टरों और चिकित्सा सेवा में लगे अन्य कर्मचारियों की जीवन लीला भी समाप्त कर दी हो, उस समय इस अनावश्यक और विवादास्पद टिप्पणी से बचा जाना ही श्रेयस्कर था। जहां हमारे ऋषि , मुनि वन प्रदेशों में तपस्या रत रहकर ज्ञान प्राप्त किया करते थे वहीं एलोपैथी के ये वर्तमान डॉक्टर भी लगभग दस वर्षों के कठिन , जी तोड परिश्रम के पश्चात् ही डिग्री प्राप्त कर पाते हैं। सामान्यतः छ वर्ष एम. बी. बी. एस. और चार से छः वर्ष पोस्ट ग्रेजुएशन (एम.डी.,एम.एस.,डी.एम.आदि) में लगते हैं। मेरी दृष्टि में तो यह भी तपस्या या कोई विशिष्ट सिद्धि प्राप्त करने के समान ही है। आज यदि मानव जाति प्लेग , चेचक, हैजा, गर्दन तोड बुखार, मलेरिया, टी.बी.और पोलियो जैसी बीमारियों पर नियन्त्रण प्राप्त कर सकी है तो उसका श्रेय बिना किसी हिचक या झिझक के एलोपैथी को देना ही होगा। शल्य चिकित्सा (सर्जरी) में तो आधुनिक चिकित्सा पद्धति ने ऐसे कीर्तिमान स्थापित किए है जिनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए ,वह कम ही होगी। सोनोग्राफी अर्थात एक्स रे , अल्ट्रासाउंड ,सिटि स्कैन एवं रक्त, मूत्र संबंधी अन्य बहुत सी जांच को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के चमत्कार ही माना जाने चाहिएं। हमारे देश में प्रसूता महिलाओं और नवजात, अल्पवयस्क बच्चों की कितनी बडी संख्या में मौत होती थी और उन पर किस प्रकार नियंत्रण पाकर उन्हें सीमित किया गया है , यह भी किसी से छिपा नहीं है।

जहां तक प्रश्न श्रेष्ठता अथवा पूर्णता का है तो विश्व की सभी पद्धतियों में कुछ गुण हैं तो कुछ त्रुटि अपरिहार्य और अनिवार्य हैं। कोई भी पद्धति अपने आप में पूर्ण अथवा दोषरहित नहीं हो सकती। क्या यह आवश्यक है कि हम एक को श्रेष्ठ तो दूसरे को निम्न जरूरी बतलाएं ? इन असामान्य परिस्थितियों में हमारा प्रयास मिलजुलकर इस महामारी को परास्त करना होना चाहिए। दोनों पक्षों को भाषा की मर्यादा का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।यह समय एक होकर मानवता को बचाने का है।

हम सबको मिलकर सनातन शाश्वत संकल्पों को दृढ निश्चय के साथ क्रियान्वित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता सिद्ध करनी चाहिए !!!!!!!!!

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुखभाग भवेत्।।

■■

बकस्वाहा को स्वाहा होने से बचाना होगा

सोनम लववंशी

पर्यावरण और जीवन एक-दूसरे के पूरक हैं। एक में भी छेड़छाड़ करने का असर दूसरे पर भी पड़ता है। अब तक की आई महामारियों ने इस बात को और भी साफ़ कर दिया है। पर्यावरण और महामारियों के बीच पुराना सम्बंध रहा है। वह चाहें साल 1347 में यूरोप में फैली ब्लैक डेथ की बात हो, अमेरिका में 1610 में आया चेचक हो या फ़िर 1918 का स्पैनिश फ़्लू। हर दफ़ा पर्यावरणीय सन्तुलन के साथ खिलवाड़ होने पर किसी न किसी महामारी ने हमें आईना दिखाया है। पिछले दो दशकों को ही ले लीजिए दुनिया ने कई वायरस जनित बीमारियों का सामना किया है। इतना ही नहीं अब तक फैलने वाली चार में से तीन महामारियां जानवरों से इंसानों में आई है। वहीं पर्यावरणविदों की मानें तो वनों की अंधाधुंध कटाई, कुदरत द्वारा प्रदत्त संसाधनों का अतिदोहन और जानवरों के असामान्य भक्षण ने जैव विविधता की डोर को ही नहीं तोड़ा है, अपितु इसका खामियाजा हमें भी भुगतना पड़ रहा है।

भले ही कोरोना जानवरों से आदमी में आया यह थ्योरी अभी सत्यता के तराजू पर न मापी गई हो, लेकिन कोरोना काल ने जैव विविधता के संरक्षण और वन संरक्षण की अहमियत को बता दिया है।

कोरोना की दूसरी लहर में लोगों को ऑक्सीजन की कमी से मरते हुए शायद ही कोई हो जिसने न देखा हो। महामारी के इस दौर में ऑक्सीजन की किल्लत से यह बात साफ हो गई कि एक प्रकृति ही है जो बीना किसी मोल के हमारी जरूरतों को पूरा करती है।

कोरोना की दूसरी लहर में मौत का भयावह मंजर मध्यप्रदेश ने भी देखा है, लेकिन इसी बीच मध्यप्रदेश का बकस्वाहा जंगल सुर्खियों में बना हुआ है। जिसकी वजह यहां के जंगलों में हीरे की खान होने की बात कही जा रही है। कहा जा रहा है कि यहां पन्ना से भी 15 गुना अधिक हीरा मौजूद हो सकता है। जिसे निकालने के लिए इस वन क्षेत्र को नष्ट करने की बात हो रही है। अब सवाल यह उठता है कि वन ज्यादा जरूरी है या फिर हीरे? इसको लेकर सरकार से लेकर आमजन के अपने-अपने तर्क हो सकते हैं। लेकिन बड़ी बात यही है कि कोरोना काल से हमनें क्या सीख ली है? क्या कोई और तरीका नही हो सकता जिससे हीरे भी निकाले जा सके और इस वन क्षेत्र को भी सुरक्षित बचाया जा सके। इस क्षेत्र में करीब 2.5 लाख पेड़ है जो कि 382.131 हेक्टेयर जंगल मे है, जिन्हें काटने की बात कही जा रही है। इसकी शुरुआत 20 साल पहले प्रोजेक्ट डायमंड बंदर के सर्वे के रूप में ही की जा चुकी थी। तो वही 2 साल पहले प्रदेश सरकार ने इस जंगल की नीलामी तक कर दी थी जिसे आदित्य बिड़ला समूह की एससेल्स माइनिंग एंड इंडस्ट्रीज ने 50 साल की लीज पर लिया है। 62.64 हेक्टेयर जमीन को मध्यप्रदेश सरकार ने लीज पर दे रखा है वही कंपनी 382.131 हेक्टेयर जंगल की मांग कर रही है। उनका कहना है कि इस जंगल से निकले मलवे को डंप करने के लिए उन्हें यह जमीन चाहिए। अगर ऐसा होता है तो यह तय मानिए की इससे बक्सवाहा का पूरा जंगल ही स्वाहा हो जाएगा।

प्रकृति ने मनुष्य को जल और जंगल देकर अपना अटूट प्रेम बरसाया है। पर मानव ने अपने स्वार्थ के चलते इन्हें नष्ट करने में कोई कोर कसर नही छोड़ी है। देखा जाए तो हमारी कई सभ्यताएं जंगलों में ही विकसित हुई है। लेकिन वर्तमान समय में हमारे जंगल घटते जा रहे है। कोरोना काल मे जिस तरह से ऑक्सीजन की किल्लत से जनता त्राहिमाम् त्राहिमाम कर रही थी उसे कौन भूल सकता है। इंडियन काउंसिल ऑफ फारेस्ट्र रिसर्च एंड एजुकेशन में एक पेड़ की औसत उम्र 50 साल मानी गयी है। इन 50 सालों में एक पेड़ 23 लाख 68000 रुपये कीमत का वायु प्रदूषण को कम करता है । साथ ही 20 लाख की कीमत का भू -क्षरण को भी नियंत्रित करता है।

अब यहां लाख टके का सवाल यही उठता है कि हीरा जरूरी है या फिर जंगल? हीरा निकालने के लिए जंगल की कटाई कितनी सही है? यह सरकार को सोचना होगा, क्योंकि क़ीमत सिर्फ़ हीरे की नहीं उस पेड़ की भी है। जिसपर तलवार लटकी हुई है। बुंदेलखंड का क्षेत्र पहले से ही सूखा ग्रस्त की श्रेणी में आता है। इन पेड़ों की कटाई के बाद यह क्षेत्र ओर वीरान हो जाएगा। इन जंगलों के दुर्लभ वृक्ष के साथ ही इन जंगलों में निवास करने वाले जीव जंतुओं का भी विनाश तय है। एक तरह से देखा जाए तो पूरी प्राकृतिक संरचना ही नष्ट होती दिखाई पड़ रही है। पर हमारे राजनेताओं को इस बात से कहा फर्क पड़ना है। उन्हें तो सिर्फ इस वन में चमचमाते हीरो की चमक ही दिखाई दे रही है। ऑक्सीजन की किल्लत से मरते लोग महज एक आंकड़ा थे, है और रहेंगे। जो हीरे से प्राप्त आंकड़े के सामने शायद कुछ भी नहीं।

देखा जाए तो सदियों से मानव ने जंगलों का विनाश ही किया है। अपनी भोग विलास की लालसा को पूरा करने के लिए मनुष्य ने जंगलों को बर्बरता से उजाड़ा है। यही सिलसिला मुसलसल अभी भी जारी रहा तो वह दिन दूर नही जब हमारी सभ्यता ही खतरे में पड़ जाएगी। एक अनुमान के मुताविक जंगलों का दसवां भाग तो पिछले 20 सालों में ही खत्म हो गया है। बात सिर्फ़ मध्यप्रदेश की करें तो यहां भी बीते दो-चार वर्षों में जंगल घटे ही हैं।इन जंगलों की कटाई कभी नए नगर बसाने के नाम पर तो कभी खनन के नाम पर की जा रही है। अगर इसी तरह वनों का विनाश जारी रहा तो वह दिन दूर नही जब इस धरती से पूरी तरह से वनों का सफाया हो जाएगा। तब न ही अमेजन के जंगलों का रहस्य बच पाएगा और न हिमालय के जंगलों की सम्पदा बच पाएगी। ग्लोबल वॉर्मिंग की ओर बढ़ती दुनिया में हम जिन वनों से कुछ उम्मीद लगा सकते हैं, वे तो पूरी तरह खत्म हो जाएंगे।

कोरोना काल में ऑक्सीजन की किल्लत के बीच मध्यप्रदेश के सीहोर में एक नज़ीर पेश की गयी थी। यहां सागौन का पेड़ काटने पर एक किसान पर 1 करोड़ 21 लाख रुपए का भारी भरकम

जुर्माना लगाया गया था।अब सवाल यही उठता है कि जब वन विभाग बक्सवाहा में खुद पेड़ों को काटने के लिए गिनती कर रहा है, तो फिर दोषी किसे माना जाएगा? इतना ही नहीं इस अव्यवस्था के 'जंगलराज' का असल जिम्मेदार कौन होगा? आख़िर में सिर्फ़ क्या सवाल इतने बड़े हीरे की खान मध्यप्रदेश के घने जंगल मे ही क्यों मिली, वह देश के बंजर भूमि में भी तो मिल सकती थी, लेकिन मानव की परीक्षा शायद प्रकृति भी ले रही। अब यह मानव के विवेक पर निर्भर करता है। वह क्या करेगा?

■ ■

हमारा तुम्हारा

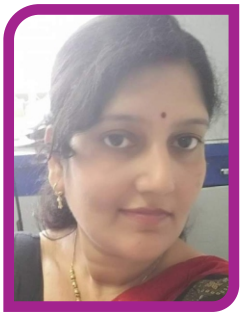

प्रज्ञा पांडेय
गुजरात

खुद को बेतरतीब कर जिस घर को संवारा है,
उस घर पर अधिकार तुम्हारा है।

खुद के रक्त से नौ महीने जिसे कोख में पाला है,
उस बच्चे के साथ भी जुड़ा नाम तुम्हारा है।

देह हमारी पर सब सौभाग्य श्रृंगार तुम्हारा है,
तुम्हारे नाम से ही वाबस्ता वजूद हमारा है।

पूजा पाठ व्रत उपवास हमारा है,
उसका पुण्य फल सब तुम्हारा है।

अश्लील इशारे , फिकरे तुम कसते ,
पर चरित्र खराब हमारा है।

हर सफलता के तुम ही हो इकलौते हकदार,
और तुम्हारी हर नाकामी के पीछे दुर्भाग्य हमारा है?

■ ■

बंगाल में बढ़ रही हिंदुओं की हत्या ?

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद से यहां लगातार राजनीतिक हिंसा जारी है। इन चुनावों में तृणमूल कांग्रेस ने अभूतपूर्व जनादेश के साथ तीसरी बार राज्य की सत्ता में वापसी की है, वहीं भाजपा 77 सीटों पर विजयी होकर राज्य में प्रमुख और कई मायनों में एकमात्र विपक्ष के रूप में उभरी है। जोकि ममता बनर्जी और उनके समर्थकों को रास नहीं आ रहा। दोनों पार्टी के कार्यकर्ता एक दूसरे को पसंद न करने की हद पार कर रहे हैं और हो रहीं हैं हत्याएं। जिनमें हिंदुओं की संख्या ज्यादा यही बात विश्व हिंदू परिषद को चुभ गयी है और वह हिंदुओं के लिये अपनी आवाज़ बुलंद करते हुए कहा कि राज्य में जारी राजनीतिक हमलों से वहां के हिंदू समुदाय के लोग डरे हुए हैं और उनके पास आत्मरक्षा का पूर्ण अधिकार है, ''जिसका वह उपयोग करेगा।''विहिप के महासचिव मिलिंद परांडे ने एक बयान में कहा कि पश्चिम बंगाल में लगातार हिंदुओं को भयाक्रांत किया जा रहा है जबकि स्थानीय पुलिस और प्रशासन ''मूक दर्शक'' बने हुए हैं।उन्होंने कहा, '' बंगाल में हिंदू समाज भयाक्रांत है और राज्य में जिन पर कानून

एवं व्यवस्था की जिम्मेदारी है, वे आंखें मूंदे हुए हैं। ऐसी परिस्थिति में, हिंदू समाज को भी आत्मरक्षा का पूर्ण अधिकार है, जिसका वह उपयोग करेगा।''बीजेपी के एमपी सौमित्र खान के अनुसार कि दो मई को चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद राज्य में बीजेपी के 40 कार्यकर्ताओं की हत्या हुई है। 60 हजार लोगों के घर को जला दिया गया था और लगभग एक लाख से अधिक बीजेपी कार्यकर्ता अभी भी बेघर हैं और वह विभिन्न जगहों में आश्रय लिए हुए हैं।उसके बाद भी लगातार हिंसा हो रही है और राज्य सरकार हिंसा पर लगाम लगाने में पूरी तरह से असफल रही है. दूसरी ओर, चुनाव बाद हिंसा को लेकर राज्यपाल जगदीप धनखड़ ने मुख्य सचिव से रिपोर्ट तलब की। इसके अलावा पश्चिम बंगाल भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष दिलीप घोष ने मंगलवार को दावा किया कि पिछले 5 वर्षों में पश्चिम बंगाल में 166 बीजेपी कार्यकर्ताओं ने बलिदान दिया है। भाजपा नेता स्वपन दासगुप्ता जो तारकेश्वर से चुनाव लड़े और हार गए, ने ट्वीट किया कि 'हज़ार से ज्यादा हिंदू परिवार' 'लुटेरी/हत्यारी भीड़' से छुपे हुए थे. उन्होंने यह भी लिखा कि 'महिलाओं के साथ शारीरिक उत्पीड़न या और भी कुछ बुरे बर्ताव को सांप्रदायिक रूप देने की कोशिश कर रही थी। इस पर सीपीआईएम के एक समर्थक, अभिनेता जॉयराज भट्टाचार्जी ने कहा, 'इसमें कोई शक नहीं कि राजनीतिक हिंसा हो रही है और तृणमूल से वामपंथी, आईएसएफ और भाजपा के कार्यकर्ता सभी त्रस्त हैं। लेकिन इस हिंसा को सांप्रदायिक पुट देकर भाजपा उससे भी गंदा खेल, खेल रही है। यह घटनाएं राजनीतिक हिंसा की हैं, जो बंगाल की राजनैतिक संस्कृति का बहुत सालों से हिस्सा रहा हैष्ठ भाजपा के सांप्रदायिक प्रचार में रत्ती भर भी सच्चाई नहीं है।' अब बंगाल की जमीनी हकीकत यह है कि हिंसा के शिकार सभी राजनीतिक दलों के लोग हुए हैं। जिसमें हिंदू मुसलमान दोनों हैं।पूर्व वर्धमान जिले की रायना विधानसभा सीट इलाके समसपुर में तृणमूल कांग्रेस के समर्थक गणेश मलिक पर धारदार हथियारों से हमला किया गया। उनकी बाद में अस्पताल में मृत्यु हो गई और उनके बेटे ने आरोप लगाया कि भाजपा समर्थकों ने उन पर बेवजह हमला किया। दावा यह भी किया गया कइसी जिले के जमालपुर विधानसभा क्षेत्र में नबग्राम इलाके में तृणमूल और भाजपा समर्थकों में झड़प हुई। बिभास बाग, शाहजहां शाह और एक महिला काकाली क्षेत्रपाल की इसमें मृत्यु हो गई। भाजपा का दावा था कि काकली उनके स्थानीय संयोजक की मां थीं, वही सीपीआईएम का दावा था कि वह उनकी पार्टी की महिला प्रकोष्ठ की नेता थीं और पोलिंग एजेंट के तौर पर काम करती थीं। इसी जिले के केटूग्राम इलाके में तृणमूल के ग्राम पंचायत के सदस्य श्रीनिवास घोष की कथित तौर पर भाजपा समर्थकों ने सामूहिक हत्या कर दी। वहीं कोलकाता के बेलेघाटा में अभिजीत सरकार नाम के भाजपा समर्थक की कथित तौर पर तृणमूल कांग्रेस समर्थकों ने सामूहिक हत्या कर दी। नादिया जिले की चाकदहा विधानसभा सीट पर उत्तम घोष नाम के भाजपा कार्यकर्ता की लाठियों से पिटाई के बाद मृत्यु हो गई। बीरभूम जिले के बोलपुर में गौरव सरकार नाम के भाजपा कार्यकर्ता की कथित तौर पर तृणमूल कार्यकर्ताओं के मंगलवार को हमले के बाद मृत्यु हो गई।कूचबिहार के दिनहाटा में हरिजन रॉय नाम के भाजपा कार्यकर्ता को कथित तौर पर तृणमूल समर्थकों ने मार दिया. भाजपा ने दिनहाटा सीट केवल 69 वोटों के अंतर से जीती थी। इसी क्षेत्र के एक और भाजपा कार्यकर्ता

चंदन रॉय, उनकी मृत्यु हो गई. इसी जिले के एक और भाजपा कार्यकर्ता मिंटू बर्मन जिन पर धारदार हथियारों से हमला किया गया था उनकी भी मृत्यु हो गई। दक्षिण 24 परगना जिले के सोनारपुर में भाजपा समर्थक हरण अधिकारी ने तृणमूल समर्थकों से झड़प होने के बाद आई हुई चोटों की वजह से जान गंवा दी।दूसरी तरफ हुगली जिले के तारकेश्वर विधानसभा क्षेत्र में चौतारा के रहने वाले गोपाल पात्रा को सामने से गोली मार दी गई।वहीं तूफानगंज में तृणमूल कार्यकर्ता शाहीन उर रहमान की धारदार हथियारों से हुए घावों की वजह से मृत्यु हो गई। उत्तर बंगाल के ही अलीपुरद्वार में मथुरा इलाके में तृणमूल की बूथ यूनिट के अध्यक्ष दीपक रॉय, की चाकुओं से हत्या कर दी गई। दत्तपुकुर इलाके में इंडियन पॉपुलर फ्रंट के कार्यकर्ता हसनुर जमान की मृत्यु, कथित तौर पर उनके ऊपर तृणमूल कार्यकर्ताओं के द्वारा बम फेंके जाने की वजह से हुई। इन सबके बीच हुगली से भाजपा सांसद लॉकेट चटर्जी ने बड़ा बयान दिया है। लॉकेट चटर्जी ने कहा कि हुगली के चंदनगोर में दंगे हो रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि बंगाल में हिंदुओं पर हमले किए जा रहे हैं। यह तुष्टीकरण की राजनीति का नतीजा है। उनका यह भी आरोप है कि प्रशासन मूकदर्शक बना हुआ है।पश्चिम बंगाल में भाजपा कार्यकर्ताओं के खिलाफ लगातार हिंसा हो रही है। खासतौर पर महिलाओं के खिलाफ। उनके पास कोई सुरक्षा नहीं है। ऐसे में मुझे सुरक्षा के घेरे में रहना उचित नहीं होगा। आपको बता दें कि लॉकेट चटर्जी बंगाली सिनेमा की जानी-मानी अभिनेत्री रही हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव में हुगली से जीतकर संसद पहुंची।वहीं बंगाली समाज ने पश्चिम बंगाल में हिंदू समाज के विरुद्ध किए जा रहे अत्याचार पर रोष जताया है। कि मुसलमानों के कारण हिंदुओं का कहीं कश्मीरी पंडितों वाला हाल न होने लगे।

राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन डीएम उमेश मिश्रा को देकर कार्रवाई की मांग की है।ज्ञापन में बताया कि बंगाली समाज के लोग जिले में सालों से रह रहे हैं। उनके पूर्वज और बुजुर्ग सालों पहले बंगाल विभाजन के समय अपनी जान माल की सुरक्षा के लिए जिले में स्थापित हुए थे। आज फिर से पश्चिम बंगाल में जंगलराज कायम है। मित्रों! देश के वोटरो! यह बंगाल का चुनाव अनेकों निर्दोष जिंदगियों को लील गया पर नेताओं के माथे पर कितनी शिकन है यह जग-जाहिर है। बता दें कि हिंदू मुसलमान विवाद यहां नया नहीं है। करीब पांच साल पहले बांग्लादेश सीमा के नज़दीक देगंगा में हिंदू और मुसलमानों के बीच बड़े पैमाने पर

हिंसा भड़की थी। कुछ राजनीतिक विश्लेषकों के मुताबिक कयास लगाए जा रहे हैं कि बांग्लादेशी प्रवासी लेबेनसरॉम की नीति अपना रहे हैं। यह नीति 'लिविंग स्पेस' का एक विवादित आइडिया है। इस नीति को सबसे पहले जर्मनी के राष्ट्रवादियों ने यूरोप में अपनाया था। सच यह है कि पिछले दो दशकों में हज़ारों बांग्लादेशी सीमा पार कर भारत आए हैं। ऐसा ही उन्होंने असम में भी किया। इससे वहां की आबादी में एक गंभीर असंतुलन पैदा हुआ। भारतीय नेताओं की लंबी फेहरिस्त है जिनमें इन घुसपैठियों को वोट के लालच में, वोटर कार्ड और दूसरे क़ानूनी दस्तावेज़ मुहैया कराने की होड़ लगी रहती है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने उन्हें सम्मान देकर अपना चुनावी समर्थन पुख्ता कर लिया है।स्थानीय लोगों के अनुसार अब जो आप्रवासी आ रहे हैं वे क्रूर व आक्रामक है और ऐसी रिपोर्टें हैं कि वो गांव वालों को डराते-धमकाते हैं। वे खाली पड़ी ज़मीनों और इमारतों को हड़प लेते हैं। यहां तक कि वे मंदिर की ज़मीन भी नहीं छोड़ रहे हैं। स्थानीय हिंदुओं का दावा है कि उन पर अपनी ज़मीन-जायदाद मुसलमानों को बेचने का दबाव है। ये मुसलमान वे हैं जो सीमा पार गाय का व्यापार कर अमीर बने हुए हैं। इससे बांग्लादेश का मांस उद्योग भी खूब फल-फूल रहा है।अन्य मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक़ सीमा पार से बांग्लादेशी मुसलमानों की घुसपैठ का स्थानीय लोगों ने खास़ तौर पर बंटवारे के बाद बांग्लादेश से आए हिंदू शरणार्थियों ने जमकर विरोध किया था। तब से हिंसा शुरू है। तब ही से सिर्फ़ ना ही बशीरहाट में तनाव

बना रहता है बल्कि राज्य के कई दक्षिणी ज़िलों में, हुगली नदी के दोनों किनारों पर तनाव बना रहता है। भाजपा अपने हिंदुत्व के मुद्दे पर संकल्पबद्ध है और हिंदू समर्थन जुटाने में पूरी सक्रियता से लगी हुई है। इसके लिए उसने हाल ही में राज्य में कई धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया है और योगी, शिवराज जैसे मुख्यमंत्री से चुनाव प्रचार भी करवाया था। इस साल मार्च-अप्रैल में आरएसएस ने रामनवमी के मौके पर पूरे राज्य में बड़े पैमाने पर जुलूस निकाला था। इन आयोजनों में जुट रही बड़ी भीड़ ने ममता बनर्जी के आत्मविश्वास को हिलाकर रख दिया है।इससे ऐसा लग रहा है कि बीजेपी राज्य में तृणमूल और कम्युनिस्ट पार्टी से आगे निकल रही है। ममता बनर्जी मुस्लिम और घुसपैठियों की हितैषी बनकर मजबूत समर्थन हासिल करने में सफल रही हैं । कारण यह भी है कि पश्चिम बंगाल की अर्थव्यवस्था कई दशकों से चरमराई हुई है और उद्योग-धंधों के अभाव में लोगों के पास कोई काम नहीं है। ग़रीब और थोड़े पढ़े-लिखे मुस्लिम नौजवान इसलिए इन चरमपंथी संगठनों के आसान शिकार हैं। जो उन्हें हिंसा के लिए बाध्य तक कर देते हैं, उन्हें बम भी बनाने पड़ते हैं और सप्लाई भी करनी पड़ती है। वहीं सोनागाछी स्लम एरिया ऐशिया का सबसे बड़ा रेड-लाइट एरिया बन चुका है जहां हिंदू बच्चियों की डिमांड बहुत ज्यादा है जहां उनका देह व्यापार होता है। सरकार कठोर एक्शन कब लेगी पता नहीं । कुछ भी हो हालात विस्फ़ोटक बने हुए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के बीच रिश्ते बहुत खराब दौर से गुजर रहे हैं और इसी वक़्त पश्चिम बंगाल में सांप्रदायिक तनाव चरम पर है। वह मोदी विरोध में कोरोना मीटिंग्स तक का बहिष्कार कर रहीं हैं। आज की परिस्थितियों के हिसाब से, हिंसा के इस चक्र को रोकने की पूरी जिम्मेदारी नई चुनी हुई ममता बनर्जी की सरकार पर है। इसी के साथ भाजपा के जिम्मेदार विपक्ष की भी राज्य को बहुत आवश्यकता है।

■■

बेबाक-बेवाच!

कलम की बात...!

डॉ अशोक कुमार मिश्रा

'यह पोष्ट उनके पेश ऐ खिदमत में है जो पानी पी पी कर सांसें रोक रोक कर इस्लाम और इस्लाम परस्तों को नाना विधि से गरियाते हैं तथा अपनी इसी बकलोलयी में अपनी काहिली अपनी दुर्बयवस्था अपनी दुर्बलता अपनी अशिष्टता और अपने उत्तर दायित्वों को छुपाते ही नहीं बल्कि अपने संस्कारों से मुँह मोड़ कर मैकाले के गुलाम बने हैं और खुद को मॉडर्न कहते हैं'

इस्लाम के अनुयायी डंके की चोट पर खुद को मुसलमान मात्र मुसलमान कहते हैं,यह अपने इस्लामिक संस्कारों यथा भेष भूषा,रीति रिवाज,पूजा पद्धति,आहार विचार और विहार को बेहिचक बेलौस अपनाते ही नहीं बल्कि अपनों के साथ साथ गैरों को भी इसे अपनाने हेतु प्रेरित करते हैं,यह तकरीर करते हैं,जमात निकालते हैं ताकि हर मुसलमान रोजा,नमाज,तिलावत में यकीन करें,इनको अपने जीवन का जरूरी हिस्सा बनाएं,इनके हर घरों में कुरान और हदीश सिर्फ रखी नहीं होती बल्कि उसका अध्ययन भी आवश्यक

होता है,इनके यहाँ हर बालक बालिका बालिग होने से पूर्व ही कुरान को कई कई बार पढ़ चुका होता है और इन धर्म ग्रन्थों का अध्ययन इनके दिनचर्या का एक अंग होता है,यह पांचों वक्त की नमाज मस्जिदों में ही पढ़ने को पूण्य मानते हैं,अगर नहीं तो जहाँ हैं वहीं वक्त पर नमाज पढ़ने में यकीन करते हैं,खासकर जुमा यानी शुक्रवार को तो यह मस्जिदों में नमाज न पढ़ना गुनाह के बराबर मानते हैंत्यह अपने मौलवी को आदर के साथ अपना मार्ग दर्शक मानते ही नहीं हैं बल्कि प्रयास करते हैं कि हर घर मे कोई न कोई पढ़ लिख कर हाफिज और कारी(धर्म गुरु)जरूर होत्इनके हर घर मे उर्दू पढ़ने लिखने और पढ़ाने के काबिल ब्यक्ति होता है तो हर मुहल्ले में अरबी पढ़ने लिखने और पढ़ाने वाला शख्स जरूर होता हैत्यह लगभग अपना सम्पूर्ण जीवन अपने मौलवी के दिशा निर्देशन में बिताने में गौरव महसूस करते हैं,ये यह तय नहीं करते कि इनका मौलवी इनका धर्म गुरु इनको दिये निर्देशों पर खुद अमल करता है या नहीं,यह उसके कर्मों का फलाफल उसके और अल्लाह के ऊपर छोड़ देते हैं न कि खुद उनकी उपेक्षा कर बोकरादी करते हुए मनमानी करते हैं,यह दाढ़ी रखकर,टोपी लगाकर और लुंगी पहनकर खुद को शर्मिंदा नही महसूस करतेत्यह अपनी बच्चियों औरतों को बगैर हिजाब और बुर्के के एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले में जानें को भी नाजायज मानते हैंत्ऐसा भी नहीं है कि इनकी औरतें आभूषण नहीं पहनती,कीमती और आकर्षक परिधान नहीं पहनती हैं,वह भी सब कुछ पहनती हैं किंतु वह प्रदर्शन में यकीन नहीं रखती बल्कि वह खुद को आवरण में छुपाकर रखने में फक्र महसूस करती हैंत्जानते हैं क्यों क्योकि यही नहीं सनातन भी स्त्री को रत्न मानता है(समुद्र मंथन में निकले चौदह रत्नों में एक स्त्री भी रही) और रत्न तभी महफूज है जब उसकी पर्दापोशी रहेत्यह अपने धर्म ग्रथों और धर्म गुरुओं पर टिप्पणी नहीं करते,यह उन पर शक नहीं करते,यह उनको काल्पनिक बताकर उनका मखौल नहीं उड़ातेत

इनके यहाँ भी फिरके हैं,इनके यहां भी मतान्तर है,इनके यहाँ भी अगड़े, पिछड़े और दलित हैं किंतु इनका अपने धर्माचरण और धर्म गुरु के प्रति मौजूद विश्वास इन सबको मात्र और मात्र मुसलमान मानता है बाकी सब कुछ मौलवी द्वारा तय जीवन संघिता के अनुसार...कुरान हदीश के आलोक में...त्यही कार्य इसाई और यहूदी भी खुल्लम खुल्ला बेबाकी से करते हैं,यह अपने पोप और पादरी के दिशा निर्देशों के सानिध्य में अपने धर्मग्रन्थों के आलोक में अपने जीवन अपनी दिन चर्या का बखूबी निर्वहन कर खुद को धन्य समझते हैं...त्यह भी मानव हैं इनके अंदर भी दोष होना स्वाभाविक है इस नैसर्गिक दोष से कोई भी मानव कैसे इनकार कर सकता है,अगर कोई ब्यक्ति अपने मे सिर्फ गुण बताता है तो यह उसकी धृष्टता ही हैत

अब मुसलमान,ईसाई और यहूदी समुदाय को जी भर गाली बकने वाले ठंढा पानी पीकर स्थिर मस्तिष्क से बगैर किसी दकियानूसी पूर्वाग्रह के जरा इस परिपेक्ष्य में खुद का मूल्यांकन करें, खुद का आत्मावलोकन करें,जो कौम जो समूह जो समुदाय अपना और अपनों का सम्मान खुद नहीं कर सकता वह गैरों से इसकी अपेक्षा कैसे कर सकता है?जो अपने ब्राह्मणों,अपने धर्म गुरुओं की खुद उपेक्षा करता हो,जो उनका उपहास उड़ाकर,अपने धर्म ग्रन्थों का अनादर करता हो,जो गीता रामायण को अपने घरों में न रखता हो,रखता भी हो तो अध्ययन न करता हो,न करवाता हो,जो जनेऊ, त्रिकाल सन्ध्या,शिखा,तिलक,परिधान और षोड्स संस्कारों को न जानता हो न मानता हो,न जानने हेतु प्रयासरत र्ट हो,जो मंदिर न जाता हो न मंदिरों के रख रखाव के बारे में सोचता ही हो, न ही वेदों उपनिषदों को जनता हो,जो संस्कृत और अपनी संस्कृति की बेशर्म उपेक्षा कर इठलाने में यकीन ही नहीं करता हो बल्कि खुद को प्रगतिवादी कहकर दम्भी अट्टाहास करता हो,जिसके यहाँ अंग प्रदर्शन अभिजात्य होने का सिम्बल हो,जिसका आहार,विचार और विहार प्रदुषित हो,इस तरह जो सनातनी खुद को पथभ्रष्ट कर चुका हो वह कैसे किसी को नसीहत दे सकता है और अगर नसीहत दाँ बनता भी है तो कोई क्यों माने?

इस तरह के समस्त नसीहत दानों से यही कहना चाहूंगा कि पहले खुद को जानिये,पहचानिए और स्वधर्मानुकूल खुद को स्थापित करिये,एक मेव हिन्दू बनिये तब आपकी नसीहत समाजोपयोगी और सार्थक होने के साथ ही सर्वमान्य भी होगी और अवश्य होगीतजिनका प्रतिपाद्य दर्शन ही वसुदेव कुटुम्बकम का रहा हो,जिनका ध्येय ही प्राणियों में सद्भाव हो विश्व का कल्याण हो धर्म की जय हो का मूल हो,जो अग्निहोत्र यज्ञ और दान के

हिमायती रहे हों उनको कोई भी क्यों न माने,क्यों न आदर करे,बशर्ते इस निमित्त खुद को प्रतिष्ठापित करने का प्रयास तो करियेत्इतने के बाद अगर आप कहेगें कि 'अहिंसा परमो धर्मःधर्म हिंसा तथैव च'तोआपकी बाणी और आपके मुखमण्डल से निकलने वाली आभा से देदीप्य होकर यह जगत आपका अभिषेक करने पर बाध्य होगात्तब लोग आपका सम्मान करेंगे और आप संरक्षित रह पायेगेंत्'कलयुगे संघे शक्ति'निश्चित रूप से निर्विकार और निरपेक्ष संघठन का आधार मात्र धर्म है,धर्म के अलावा कुछ भी नहीत्यह मत भूलिए सनातन की कमजोरी(दिशाहीन होना) ही आपकी विरोधी है।

■■

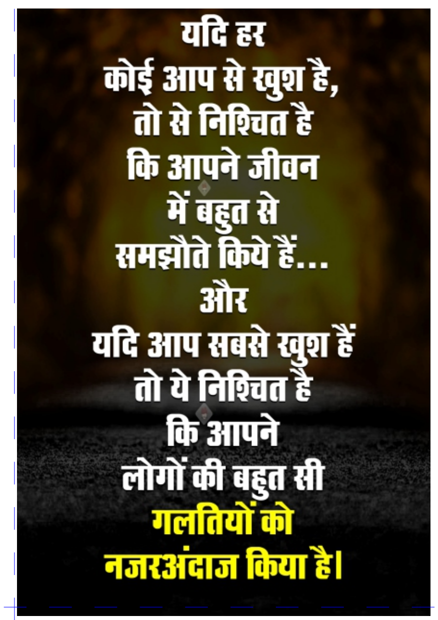

'किधर गया आदमी.....?'

सर्वजीत सिंह
चंदौली

आदमी और कुत्ते का
संबंध बहुत पुराना है,
मनुष्य के साथ रहकर
उसकी नकल करना जाना है
आदमी के साथ उठना बैठना,
खेलना कूदना और उसके
जीवनोपयोगी कार्यों में,
सहयोग करना
कुत्ते की आम प्रवृत्ति रही है ।
काल चक्र की गति के साथ
मनुष्य बनने की राह पर
तेजी से अग्रसर है कुत्ता ।
युग बदला,........दिन बदले,
......मनुष्य भी बदल गया
वह अपनी मनुष्यता त्याग
कुत्ता बनने में लग गया ।
लघु स्वार्थरूपी
सूखी हड्डी का एक टुकड़ा
पाने के लालच में
मालिक के इशारे पर
भागने - दौड़ने, हाँफने -काँपने
और उसके साथ
कुत्ते की तरह दुम हिलाने लगा ।
आदमी सो गया.........
ना जाने कहाँ खो गया,
इंसानियत मर गई
हैवानियत जग गई ।
मालिक की ललकार पर,
किसी निरीह को दौड़ा लेना
अपने पैने दाँत उसके
शरीर में धसा देना
अब कुत्तों की नहीं
बल्कि कुत्तों सदृश्य आज के
आदमी की प्रवृत्ति बन गई है ।
वर्तमान समाज का सीधा
साधा निरीह इंसान
आदि काल के कुत्तों से नही,
बल्कि-आज के नवीन कुत्तों से
ज्यादा खौफ खाने लगा है ।
उसे असमय मृत्यु का भय
दिन रात सताने लगा है,
इन पागल कुत्तों के काटने से
मृत्यु सय्या पर पड़ा इंसान
असह्य वेदना से चीखने लगा है
चिल्लाने लगा है,
और अनवरत दिन-रात
छटपटाने लगा है
जहरीले मनुष्य के शरीर में,
कुत्ते के काटने के
सारे इंजेक्शन
बेकार हो चुके हैं ।
उसे जीवन की अंतिम बेला में
हर कुत्ता मनुष्य और हर मनुष्य
कुत्ता नज़र आने लगा है ।
कैसी है विवशता
कुत्ते जैसे आदमी की
जो स्वामी भक्ति का
नायाब रत्न होकर
अपनी ही बिरादरी की
नज़रों में गिर गया ।
गिर गया
साधारण इंसान की नज़रों में
आदमी ।
दुनिया के किसी
कोने में जाकर सो गया,
या कुत्तों के हुजूम में,
कहीं खो गया
आप ही सोचें ....
और मुझे बताएँ.........
आखिर किधर गया आदमी
....?

■■

'20 जून'' यानि फादर्स डे के अवसर पर पिता को समर्पित :

'पिता' (मुक्तक)

इंद्रभूषण कोचगवे

1 बसी ममता सदा माँ में, पिता में शौर्य होता है।
सहन करती अगर माता, पिता में धैर्य होता है।
यहाँ पर ईश जो देखा, यही दो रूप मिलते हैं,
करें सत्कार दोनों का, यही तो धर्म होता है।

2 अधर से चूमकर सिर को, सदा आशीष देता है।
दिखाकर स्वप्न तारों का, व्यथाएँ छीन लेता है।
पिता के प्यार में बसता, न जाने कौन सा जादू,
नहीं मिलती ज़माने को, वही वह हीर देता है।

3 अभी भी याद है मुझको, मिला था ज्ञान का आगर।
मधुर मुस्कान अधरों पर, सजाया प्यार का लाकर।
सदा वट-वृक्ष ही बनकर, मिटायीं भ्रांतियाँ सबकी,
किया सुरभित चमन मेरा, बहाकर प्रेम का सागर।

4 घनेरी रात में आकर, सदा दीपक जलाते हो।
पवन अवरुद्ध होता तो, झरोखे खोल जाते हो।
अगर पहुँची जरा सी भी, उदासी की झलक मुझमें,
वहीं चुपचाप तुम आकर, मधुर कुछ गीत गाते हो।

5 निभाया साथ अबतक, तभी भी चाह थी बाक़ी।
चले थे साथ हम मिलकर, अभी भी राह थी बाक़ी।
यहाँ की छोड़कर महफिल, बसायी क्यों नई दुनिया,
यहाँ पर जाम है खाली, नहीं जब साथ ही साकी।

6 न कोई रात थी अपनी, न कोई दिन रहा अपना।
रहें बच्चे सलामत बस, सजाया एक था सपना।
खुदी को खो दिया जिसने, पिता बस नाम है उसका,
न कोई शौक है बाक़ी, न कोई धाम है अपना।

7 रहा है तू सदा हीरो, तभी तो साथ तू आया।
रुकावट लाख आयी थी, खुशी से पार तू पाया।
सधी थी साधना तेरी, बनी जो ज़िन्दगी मेरी,
बचाकर शूल से दामन, सुमन भी साथ तू लाया।

भूल मत जाना

गगन के गीत गाने में
भुवन को भूल मत जाना!

तुम्हारी जिंदगी की जीवनी भी मौन मिट्टी में,
तुम्हारी सांस की संजीवनी भी मौन मिट्टी में,
अथक अहसास की ऊंचाइयों की कामना वाली,
तुम्हारी भावना की मधुबनी भी मौन मिट्टी में।
सुमन के गीत गाने में
चमन को भूल मत जाना!

हवा में सिर खड़ा होता चरण होते धरातल पर,
हरिक आदर्श ऊंचा है मगर सच के धरातल पर,
तुम्हें गर गगनचुंबी कामनाएं रास आती हों,
लिखो संकल्प पत्थर से भरे पग में धरातल पर ।
सपन के गीत गाने में
नयन को भूल मत जाना!

हथेली पर उठाकर भूख आंखों में पिपासा भी,
न कोई शख्स है जो जी सका पीकर हताशा भी,
यहां इंसानियत हर रोज ही बेमौत मरती है,
कहो कैसे जिए इस लोक में यह भाव भाषा भी।
जलन के गीत गाने में
अगन को भूल मत जाना!

डॉ. राम विनय सिंह
देहरादून

तपती गर्मी में एक गीत,..

चलना मुश्किल है

सूरज है नाराज आज कुछ
कहना मुश्किल है,
उबल रहा अंगार धरा पर
चलना मुश्किल है।

छत नीचे तंदूर जला तो
तड़पा सारा गांव ,
घिघियाकर अनुदान मांगते
ए सी कूलर छांव।

पुरवाई के लाग लपेटे
रहना मुश्किल है ।
उबल रहा अंगार धरा पर
चलना मुश्किल है।।

पूज रहे पनघट के पाहन
समतल पोखर ताल ,
रेत नदी तट अनुबंधित हैं
होते रोज हलाल ।

चट्टानों में निर्झर उलझा
झरना मुश्किल है।
उबल रहा अंगार धरा पर
चलना मुश्किल है।।

धूल भरी आंधी उपवन का
कर जाती उपहास ,
गुमसुम-गुमसुम सी लगती है
जीवट जीती घास ।

हरियाली के हिलकोरों का
हिलना मुश्किल है ।
उबल रहा अंगार धरा पर
चलना मुश्किल है।।

आग लगाने वालों में है
मौसम का भी नाम ,
हाथ हथेली हवा बहाते
मारुत है बदनाम ।

भरी पतीली दाल चढ़ी पर
गलना मुश्किल है ।
उबल रहा अंगार धरा पर
चलना मुश्किल है।।

बरगद पीपल नीम नुमाइश
करते पल्लव आम ,
काले भूरे मेघों का तन
तर्पण करता घाम।

सांसो की पूरी गिनती तक
जीना मुश्किल है ।
उबल रहा अंगार धरा पर
चलना मुश्किल
है।।

शिव मोहन सिंह
उपसम्पादक
सच की दस्तक

इंसान की किस्मत

श्याम यादव
नेशनल मोटीवेटर

इंसान की क़िस्मत मे क्या लिखा है क़ोई नहीं जानता किन्तु कर्म के आधार पर हम अपनें मुक्कदर को बदल सकतें हैं। सिर्फ दौलत कमाना ही मानव जीवन का सार्थक अर्थ नहीं है। पैसा इंसान की जरूरत है किन्तु यहाँ से साथ लेकर कोई नहीं जाता। साथ लेकर जाता है तो अपनें पुण्यों की कमाई और पुण्य कीमत कमाई कभी भोग विलासिता की वस्तुएं नहीं बल्कि परोपकार, संकट के समय किसी की सहायता, मीठे बोल होते हैं। ऐसा पहली बार नहीं बल्कि अनेकों अवसरों पर कुछ लोगों को मौके का फायदा उठाते हुए देखा गया है। किन्तु इस समय की महामारी मे भी लोग अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आ रहें। किसी जीवन बचाने के लिए लोग अपनी जानं की परवाह करतें किन्तु कुछ लोगों जो मानसिक रूप से रुग्ण ना होते हुए भी रुग्ण है,स्वार्थी और पशुओं से बदतर है इस समय भी वो कालाबाजारी कर अपनें आपकों राक्षसी प्रवृत्ति का होंने का प्रमाण दे रहें हैं। नास्तिक लोग कहतें हैं कि भगवान नहीं होते, संकट के समय जो किसी की सहायता करता है वही भगवान हैं और जो दूसरों को संकट मे डालकर जश्न मनाया वही राक्षस है। वायरस बनाने वाले वैज्ञानिक नहीं बल्कि राक्षस है और इसकी दवा, वैक्सीन बनाकर लोगो की जानं बचाने वाले ही सही मायने मे वैज्ञानिक है जो दैवीय जाति से संबंध रखते हैं। मौके का फायदा उठाकर आप चाहें जितना भी

धन संचय कर ले आपको सुख की अनुभूति नहीं मिल सकती। आप किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचा कर, किसी की परिस्थिति का लाभ तो उठा सकतें हो किन्तु दुआएं प्राप्त नहीं कर सकतें और दुआओं की ताक़त ऐसी होती है कि इंसान को बड़ से बड़ संकट से निकाल लेती है। आखिरकार बढती हुई शिक्षा और तकनीकी हमारा विकास कर रहीं हैं या विनाश???? आज मानवीयता की जगह अमानवीय कृत्य लेते जा रहें हैं। प्रतिदिन होंने वालीं घटनाएं जिनका मीडिया सेवा मालूम चलता है जोइन कि 1/2झ्होंगे किन्तु वास्तविक आंकडे देखें तो आपकी आँखे फटी की फटी रह जायेगीं।

एम्बुलेंस में गंभीर बीमार महिला का बलात्कार, हॉस्पीटल में बलात्कार, महामारी के समय दवाई और अन्य सामग्री की कालाबाजारी, महामारी के समय एकजुट होंने को बजाय कुछ राजनेताओं की सिर्फ रायता फैलाने की राजनीति कब बदलेंगे ये लोग अपनी मानसिकता, कब आयेंग ये लोग संकुचित विचारधारा से बाहर, कब समझेंगे लोग कि इंसानियत से बढ़कर कोई धर्म नहीं और बिना चरित्र के मानव जीवन व्यर्थ है। समय आ चुका है इंसान को अपनें नेक रस्ते पर चलने की, प्रकृति का ख्याल रखने की, विधाता के द्वारा बनायें गयें विधान का अनुसरण करनें की, जीव ञ्जन्तुओं ,पेड़ - पौधों की रक्षा करनें की, भोग की जगह योग और साधना को अपनाने की अन्यथा आने वाले समय बड़ा हीं भयानक होगा।

■ ■

सच बोलो

विजयानंद विजय
बक्सर (बिहार)

बोलो तुम सच को झूठ
या झूठ को सच बोलो।
जुबाँ तुम्हारी, मर्जी तुम्हारी
जो जी चाहे, सब बोलो।

बंद कर दो तुम सच को
झूठ के कागजी लिफाफे में।
लिख दो पता उस पर सच का
और उस झूठ को ही सच बोलो।

डूबोकर झूठ की चासनी में सच को
सच में, तुम झूठ का चाहे रस घोलो।
मगर मिट नहीं सकती, सच की हस्ती
चाहे हजार बार तुम झूठ को सच बोलो।

ज़िंदा रहता है सच, झूठ के बीच भी
चाहे जी भरकर झूठ को सच बोलो।
कभी नहीं जीत पाएगा झूठ, सच से
इसलिए अब बस, तुम सच बोलो।

नहीं ढँक सकता सच, कभी झूठ से
टिक नहीं सकता झूठ, कभी सच के सामने।
इसलिए बोलो, तो बोलो झूठ को झूठ
और सच को हमेशा सच बोलो।

■ ■

याद कर वो दिन मछेरे।

याद कर, गये दिन मछेरे,
जब नदी थी पास तेरे
छान लाये तुम मछलियां,
छोड कर मोती बहुतेरे ।
थे मचलते ऊर्मियों पर
जो सुमन सुचिर नहीं थे ,
धार को आधार कहते,
बहते मगन स्थिर नहीं थे ।
जब खिली किरणें खिले,
खोई किरण तो रूप खोये
बुलबुले संग गुनगुनाते
गुल ललचाते अ-बोये ।
तुम ललच गये तोड लाये,
छोड आए जल जख़ीरे ।
याद कर गये दिन मछेरे ...।
पाँख फरकाती लहर में
जो उछलती ख़ूबसूरत
वह ज़रूरत धार की बस धार
उसकी भी ज़रूरत।
धार के बाहर कब
प्रीत-ज्वार का अहसास होता ,
भूल बैठे तुम , हृदय नहीं,
पाँख का प्रवास होता ।
तब तलक ही मग्न मछली,
गोद नहीं ले लें कछारें ।
याद कर गये दिन मछेरे...।
वह नदी अब भी वहीं है
और गहती उर्मियां भी
मिल गई फिर से मछलियां
और बहती कुंभियाँ भी।
सीपियाँ जो गर्भ तल पर थी
सुरक्षित है सुरक्षित ,
फाड़ आये जाल अपना
फेंक पानी में अलक्षित ।
गर्भ भरी गहरी नदी
कहते न थकते थे किनारें ,
याद कर गये दिन मछेरे...।
बस यही अपराध तेरा
और तुम पापी हुआ है ,
गाये आत्मवंचना से
आप संतापित हुआ है ।
स्वाद में भर चाँद तारे
बादलों के पार जाना
भूख की सच्चाइयों का
कहां वाजिब यह बहाना !
हो गगन चकमक भले ,
कब हाथ आते हैं सितारे ।
याद कर गये दिन मछेरे.....।

पंकज कु.बसंत
मुजफ्फरपुर बिहार

अनायास ही मन हुआ मधुमास

डॉ अवधेश कुमार अवध

स्वभाव से हर व्यक्ति एक गीतकार होता है। जैसा कि कवि भर्तृहरि ने लिखा है कि 'साहित्य संगीत कला विहीनः, साक्षात् पशु पुच्छ विषाण हीनः। तृणं न खादन्नपि जीवमानः, तद्भागदेयं परम पशुनाम्।।' हर मनुष्य में एक स्वाभाविक कवि बसता है, एक कलाकार रहता है, एक संगीतज्ञ तान छेड़ता है। यह स्वीकार करने में भी विस्मय नहीं होना चाहिए कि दिव्यांग मूक-बधिर के भीतर भी संगीत की सरस धारा बहती है जिसे हमारी प्रज्ञा प्रायः चिह्नित नहीं कर पाती। साहित्य की विविध संस्थाओं से जुड़कर अहर्निश हिंदी माँ की सेवा में संलग्न सेवा निवृत्त अभियंता देवभूमि उत्तराखंड के प्रवासी बड़े भाई श्री शिव मोहन सिंह भी इससे अछूते नहीं हैं। काव्य का कीड़ा इनके रग-रग में बसा है। गीत का माधुर्य इनकी रसना का आस्वादन है।

किशोर वय की जागृति के बाद रसिकायु में सन् 2018 में प्रकाशित काव्य पुस्तक मन हुआ मधुमास में कवि का मन मयूर नाच उठता है-

'मन हुआ मधुमास अब तो,
इक बहाना चाहता हूँ।
गीत आया है अधर पर,
गुनगुनाना चाहता हूँ।'

आलम्ब, उद्दीपन, अनुभाव और संचारीभाव से लबरेज कवि का आकुल मन अनिश्चय की स्थिति में न जाने किससे (स्वयं से या जग से) सवाल करने लगता है-

'मन हुआ मधुमास,
बोलो क्या करें?
हर तरफ उल्लास,
बोलो क्या करें?'

कोई भी कवि चाहे श्रृंगार में कितना भी निमग्न हो जाए, किन्तु जब बात राष्ट्र की आती है तो वह समझौता नहीं करता। दहाड़ने लगता है। सर्वस्व न्यौछावर के लिए तत्पर रहता है। इस भाव को देख सकते हैं-

'बहुत हो चुकी मक्कारी अब,
'बात वतन की' करना होगा।
भारत माँ के लाल सभी हैं,
'भारत की जय' कहना होगा।'

न केवल गीत बल्कि नवगीत, कविता मुक्तक एवं दोहा सृजन में भी आप बेहद समृद्ध हैं। गद्य के आँगन में भी पखेरू बन जाने लगे हैं। तत्सम और देशज शब्दों की आँख मिचौली अनायास ही मानस में रसाप्लावन ला देती है। एक दोहा द्रष्टव्य है-

'गली-गली में घूमती, पुरवा संग सुगंध।
मर्यादा बेचैन है, टूट रहे अनुबंध।।'

मानव एक सामाजिक प्राणी है इसलिए भावनाओं का विनिमय महत्वपूर्ण है। 'अवाक' नहीं रह सकता। क्षणिक मौनता भी खलती है और एकाकीपन विक्षिप्त कर सकता है। इस सम्बंध में एक मुक्तक देखना ठीक रहेगा-

'मौन बस्ती हुई, कुछ दुवा कीजिए।
दिल की सुन लीजिए, कुछ सुना दीजिए।
इस तरह मौन रहकर, मलिन होता मन,
प्रीति का गीत अब, गुनगुना लीजिए।'

■ ■

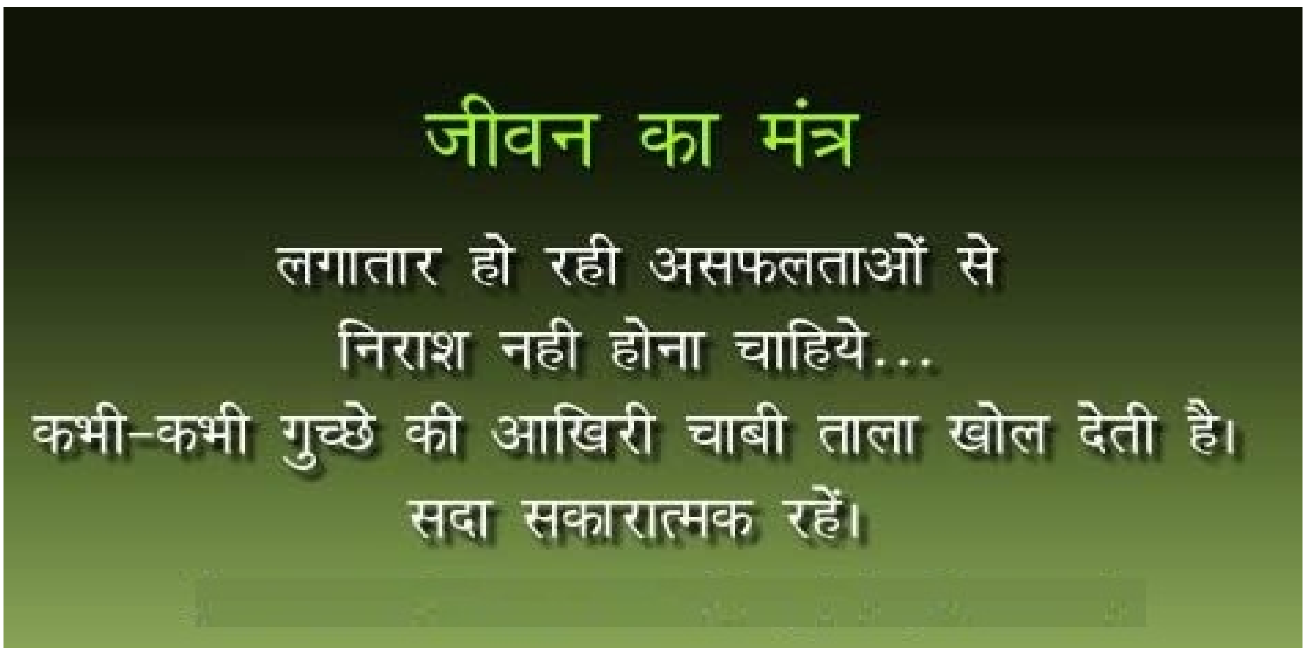

नया अध्याय

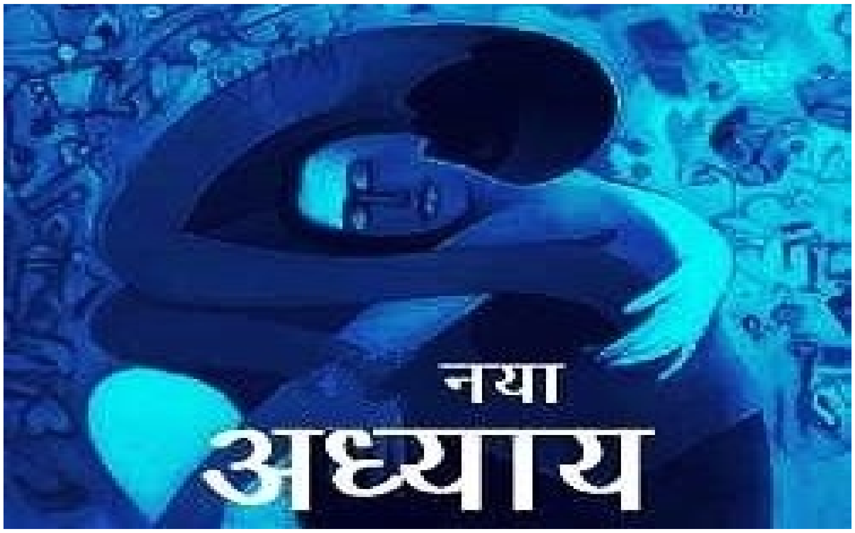

सफर का एक नया अध्याय
लिखना शुरू कर दिया मैंने।

क्यों बँधू अब मैं ?
मोह के कच्चे धागों में
मर्यादाओं की बेड़ियों में
आदेशों की अनुज्ञाओं में
खोखली वर्जनाओं में ।
तिरस्कारों से कुंठित होना
अब छोड़ दिया मैंने।
सफर का नया अध्याय
लिखना शुरू कर दिया मैंने।

अब मैं हूं स्वच्छंद
रूढ़यों के पिंजरों से मुक्त
उन्मुक्त परिंदों की तरह
न तेज हवा न आंधी
न तूफानों का भय ।

आकाश की अनंत ऊंचाई को
छूना सीख लिया मैंने ।
सफर का नया अध्याय लिखना
शुरु कर दिया मैंने ।

इस अध्याय में होंगे
मेरे कुछ अनाम मित्र
कुछ हृदय स्पंदन से
लिखें उकेरे हुए चित्र
पर्याय,सर्वनाम,मुहावरों से
संधि-विग्रह सीख लिया मैंने।
सफर का नया अध्याय लिखना
शुरु कर दिया मैंने ।

इस अध्याय में न होगा कोई हलंत
नशब्द कोई अवरोधक
न ही विस्मयादिबोधक
न ही कोई प्रश्न चिन्ह
न अर्द्धविराम ,
बस लगेगा जब लगेगा एक बार पूर्णविराम
और होगा सर्वाधिकार सुरक्षित मेरा नाम
सफर के नए अध्याय पर
नया हस्ताक्षर करना सीख लिया मैंने ।
सफर का नया अध्याय लिखना
शुरू कर दिया मैंने।

श्रीमती डॉली डबराल
देहरादून

अवधी भाषा में दर्जनों काव्य लिखकर बने आज के तुलसीदास

संजय कुमार दुबे
जौनपुर

1-नही मिली कोई सहायता फिर भी निर्वाध रूप से लेखन कर रहे है

महराजगंज(जौनपुर)संत देवमणि मानस मरार 75 वर्ष की उम्र में अवधी भाषा को जगा रहे है। हिन्दू ग्रन्थों एवं अन्य सामाजिक प्रश्नों को अवधी भाषा में लय बद्ध करना इनके बाएं हाथ का खेल है।चार भाइयों में एक देवमणि मिश्र कब कविता मय हो गए यह उनको भी नही मालूम है ।हां बस इतना जानते है कि सुबह शौच के लिए जब गए तो वापस घर लौटते समय कुछ छंद गुनगुनाने लगें उसी को एक कागज पर लिख दिया और आज दर्जनों काब्य लिखकर अवधी भाषा मे तुलसीदास के कार्यों को आगें बढ़ा रहे हैं।

महराजगंज बिकास खंड के पश्चिमी उत्तरी छोर पर स्थित मरखापुर गांव निवासी परमेश्वर मिश्र के चार पुत्रो में एक देवमणि मिश्र केशव कुटीर नाम की कुटिया में अपना निवास बनाये है।सादगी से रहना संतो जैसा पहनावा और संतो जैसा आचार विचार किसी के मन को मोह लेता है। संत देवमणि मिश्र कई दर्जन कविताएं अवधी भाषा में लिखे हैं और धन

के अभाव में हस्त लिखित कविताएं बाइंडिंग करके एक लाल कपड़े में बांध कर धरोहर के रूप में उसको रखे है।यदि इस आज के आधुनिक तुलसीदास को सहायता प्राप्त हो जाती तो निश्चित रूप से रामचरित मानस के रचयिता तुलसीदास से कम नही है। इनकी रचनाएँ।सरल और अवधी भाषा में लिखित इनकी संरचना सभी के पल्ले पड़ने वाली है।

1- संत देवमणि मिश्र द्वारा रचित कविता संग्रह

जनपद मुख्यालय से 50 किलोमीटर दूर प्रतापगढ़ सीमा से सटे गांव मरखापुर में एक कुटी में अपना निवास बनाये है।जो बदलापुर तहसील होते हुए महराजगंज ब्लाक से राजाबाजार रोड से आने जाने का मार्ग है।

1- श्री मद भागवत गीता मंजुल मंजरी

2-श्री मद भागवत महापुराण अवतरण 4 भाग

3- दुर्गा लीला नाटक

4- ख्यालादिक प्रंसग। उपनिषद

5- गुरु महिमा शिव चौसटिक

6- कंजातिबिर चालीसा

7- कृष्ण मानस पीयूष कृष्ण महिमा

8- गुरु चौसटिका

9- आध्यात्मिक आचार्य साधना कांड

10 - देवरहवा बाबा की महिमा

11- नारी परम् धर्म दीपिका रक्ष्य काब्य

12- रामचरित मानस कलरव

13- पांच माताओं की सेना का फल

14- हनुमान चरित प्रथम व द्वितीय खण्ड

15- शिव सोपान अंक चंद्रमा चालीसा

16- आवहु बहुरि हरि यहि मासा काब्य क्षीर

17- गुरु बृहस्पति कथा

18- आधुनिक पर्व शिखर काब्य

19- दोहा सिंधू दोहावली

20 -हनुमान चरित्र

21- दुर्गा सुख धाम मुदिताइनी काब्य

22- क्या रावण आज भी है

23- मनिचार प्रेम प्रसाद

24- मानस तंरग

देवरहवा बाबा को अपना गुरु व तुलसीदास को अपना आदर्श मानने वाले संत देवमणि मिश्र ने अभी तक यह प्रयास नही किया कि उनके द्वारा रचित काव्य या ग्रंथ को पेटेंट कराया जाये क्योंकि उनका कहना है कि मुझे तो केवल भगवत प्रेम से मतलब है और सारी प्रक्रियाएं मिथ्या है।अपनी यादों को आगें बढ़ाते हुए देवमणि मिश्र का कहना है कि मैं न किसी के द्वारा और न ही किसी की प्रेरणा प्राप्त किया हूँ। हाँ आदर्श के रूप में मेरे तुलसीदास हैं और गुरु तो मेरे देवरहवा बाबा ही है।अक्सर ऐसा होता है जब महान विभूतियां इस संसार से चल बसती हैं तब उनके कृत्यों की चर्चा चहुँओर होती है।संत देवमणि अपना जीवन भी इसी के नाम समर्पित कर दिए है।पीले वस्त्र में जीवन यापन करना व अपनी चौकी न उठना उसी पर अपना 75 वर्ष बिता देना इनकी दिनचर्या है।सभी देववाणी काव्य पूर्व में संस्कृत भाषा में लिखे गए थे किंतु तुलसीदास ने महर्षि बाल्मीकि द्वारा लिखित संस्कृत भाषा को अवधी भाषा में लिखा तो आज रामचरित मानस का महत्व यह है कि हिन्दू के प्रत्येक घर में रामचरित मानस है।उसी प्रकार संत देवमणि ने भी कई संस्कृत भाषा को अवधी भाषा में लिख कर समाज को एक अनमोल धरोहर दी है।

■ ■

जामुन

आओं मुनमुन
आओं गुनगुन
मिलकर खाएं
प्यारे जामुन ।।

आता जब जून
लाता संग जामुन ।
सबके मन भाते
खट्टे - मीठे जामुन ।।

इसके कई गुण
ध्यान से सुन ।
कैंसर,शुगर में
रामबाण जामुन ।।

पथरी,लीवर,खून
की गंदगी करें दूर ।
औषधीय गुणों से
भरपूर हैं जामुन ।।

गुठली के चूर्ण
से शुगर होय दूर ।
ज्यादा ऑक्सीजन
में शुमार हैं जामुन ।।

गोपाल कौशल
जिला धार, म. प्र

हातिम

डॉ. अहमद मकलेद
(मिस्र देश)

मौन के विजेता हातिम अलगाव की जंजीरों को तोड़ने और जीवन में लौटने में सफल होते हैं।

एक कमरे के कोने में बैठा 'हातिम' बैठा था। वह एक युवक है जो अपने सहयोगियों, साथियों और रिश्तेदारों के बीच अच्छी प्रतिष्ठावान व्यक्तिव है। वह एक ऊर्जावान व्यक्ति हैं और जीवन में आगें बढ़ रहा है। वह एक प्रतिष्ठित शानदार कंपनी में खुशी - खुशी काम करता है। जबकि एक ऐसी परिस्थिति के परिणामस्वरूप उसे अपने एक सहयोगी की रोज नाराज़गी झेली पड़ रही है। फिर उसने जल्दी काम छोड़ने और अपने घर लौटने का फैसला कर लिया। बस कुछ आराम करने के लिए, इसलिए वह अपने तनाव को दूर करने के लिए बंद अंधेरे कमरे में बैठ गया और अपने पैरों के बीच अपना सिर रखकर और अपने हाथों से उसे ढँक कर सोच में गुम हो गया। वह दुनिया को अपने क्रोध और अपनी परिस्थिति की संकीर्णता की घोषणा करने के लिए और उसने अपने कमरे की दीवारों को तब तक खुद में बंद कर दिया

लेकिन उसने दुनिया के सामने अपनी शिकायत नहीं उठाई और ना ही अपने परिचितों के घेरे को घेरने वाले सभी लोगों से संबंधों के विच्छेद की घोषणा की। परन्तु कम्पनी में यह अपमान की घटना कोई नई बात तो थी नहीं फिर भी वह चुप रहा। परिणामस्वरूप कुछ सहयोगियों के बीच काम पर विवाद एक साधारण संकट के बढ़ने के परिणामस्वरूप जिसने उनके दिमाग को एक गतिहीन वापसी की ओर मोड़ने के विचार को ही पूरी तरह उलट दिया। आज उसके अपने कमरे के कोने में सन्नाटा ही उसका साथी था लेकिन जब उसने अपने सामने दीवार की तरफ देखा तो उसे अपनी ही काली छाया मिली। वह अपनी अँधेरी छाया से डरता था और उसे देखकर काँपता था और उस पल यह नहीं पता था कि वह एकांत की ओर मुड़ने के लिए दिमागी बैठक की चौखट से निकल गया था। लेकिन उसी समय एक सख्त आवाज गूंजी। वह तुरंत जागा और बोला, ''हाँ। माँ! ने कहा, ''हातिम और उसे नींद से जागने का समय याद दिलाया कि मुख्यालय जाने की तैयारी करो। यहाँ 'हातिम' को पता चलता है कि उसकी उदासी उसके भीतर दबी हुई है और केवल खुद ही समझना होगा। दुनिया उसकी परवाह करती है पर उसने अपनी हालत की खुद की परवाह करनी चाहिये । एकांत की यात्रा के दौरान उनका साथी उनका स्पेक्ट्रम और उनकी छाया का प्रतिबिंब था। उनकी गहरी नींद के खोखलेपन में उनकी अलगाव यात्रा के दौरान बहुत कुछ तैर रहा था। इसलिए 'हातिम' का एहसास हुआ कि जीवन अतीत है और दुख के लायक नहीं है और उन्होंने अपने व्यवहार का पुनर्मूल्यांकन किया और यहीं से सुख उसका मित्र और साथी बन गया। क्योंकि जीवन असहमति और दुख की परेशानी के लायक नहीं है। हातिम ने एकांत के बारे में फिर कभी नहीं सोचा और उसकी सोच हमेशा भविष्य से संबंधित रही और उसमें सफलता कैसे प्राप्त की जाए। आज बदला हुआ हातिम हर उस व्यक्ति से दूरी बनाने की कोशिश करता है जो उसके उत्साह को मारता है या उसके उत्साह को कम करता है। उसकी सफलता के वैभव से दूर करता है जो उसे नेकी के रास्ते से दूर करता है। बुरे वक्त को हातिम ने भुलाना शुरू औकर दिया। हर पल जो बीत जाता है, 'हातिम' याद नहीं करता है कि वह अज्ञात से डरता था और उसका डर उसके दुखों का सामना करने में असमर्थता से जुड़ा था। इसलिए जब 'हातिम' को उसकी बुरी हालत की सच्चाई महसूस हुई और खुद का सामना करना पड़ा तो उसने संतुष्टि और खुशी हासिल की और इस सोचत - सोचते हातिम सुकून से सो गया, नहीं उसे पता है कि वह अपने अगले सपने में क्या सामना करेगा? क्या आप उससे फिर से अपनी काली छाया का सामना करने की उम्मीद करते हैं या नहीं ??

■ ■

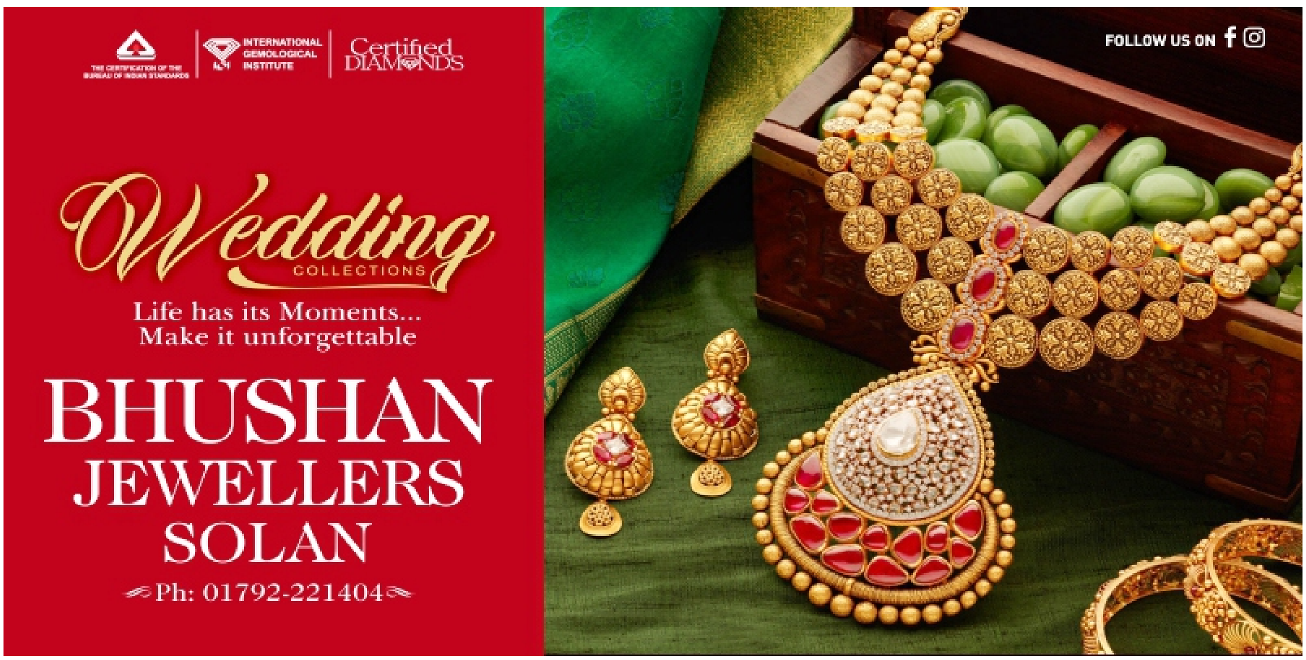

भारतीय महिला पहलवान विनेश ने पोलैंड ओपन में जीता गोल्ड

मनोज उपाध्याय
खेल सम्पादक

गीता फोगाट के बाद सभी महिला पहलवानों के इरादे और हौंसले मजबूत हो गये हैं। इसी कड़ी में भारत की स्टार पहलवान विनेश फोगाट ने शुक्रवार को यहां पोलैंड ओपन के 53 किग्रा में स्वर्ण पदक जीतकर साबित किया कि तोक्यो ओलंपिक के लिए उनकी तैयारियां सही दिशा में आगे बढ़ रही हैं। इससे ओलंपिक से पहले उन्हें मैट पर कुछ अहम समय भी बिताने को मिल गया। 26 साल की विनेश का यह सत्र का तीसरा खिताब है, उन्होंने मार्च में माटियो पेलिकोन और अप्रैल में एशियाई चैम्पियनशिप का स्वर्ण पदक भी अपनी झोली में डाला था। इस जीत से विनेश संभवतः तोक्यो ओलंपिक में शीर्ष वरीय पहलवान बन जायेंगी। शुरुआत में 2019 विश्व चैम्पियनशिप की कांस्य पदक विजेता एकातेरिना पोलेशचुक के खिलाफ मुकाबले को छोड़कर विनेश को अपनी किसी भी प्रतिद्वंद्वी से परेशानी नहीं हुई और उन्होंने पोडियम में शीर्ष स्थान तक पहुंचने के दौरान केवल दो अंक ही गंवाये।फाइनल में यूक्रेन की ख्रिस्टिना बेरेजा के खिलाफ उन्होंने एक भी अंक नहीं गंवाया और 8-0 से जीत दर्ज की। विनेश ने अपने ज्यादातर अंक 'डबल-लेग अटैक' से बनाये जबकि 2019 यूरोपीय रजत पदक विजेता बेरेजा पूरे मुकाबले में रक्षात्मक बनीं रहीं। विश्व कांस्य पदक विजेता और एशियाई खेलों की चैम्पियन विनेश को पोलेशचुक के खिलाफ 6-2 की जीत हासिल करने में संघर्ष करना पड़ा तो वहीं सेमीफाइनल में अमेरिकी प्रतिद्वंद्वी एमी एन्न फेर्नसाइड को उन्होंने महज 75 सेकेंड में पिन (चित) कर दिया। विनेश को शुरुआती दौर में पोलेशचुक की रक्षात्मक खेल से कड़ी चुनौती मिली। उन्होंने रूस की इस पहलवान के खिलाफ बायें पैर पर हमला करने की रणनीति अपनायी लेकिन उनका दांव उलटा पड़ गया और पोलेशचुक ने 2-0 की बढ़त कायम कर ली।विनेश ने दूसरे पीरियड में प्रतिद्वंद्वी के दोनों पैरों पर हमला किया और स्कोर को 2-2 करने में सफल रही। पोलेशचुक ने इसके बार तकनीकी गलती कर दी जिससे विनेश ने दो अंक और हासिल कर लिये। उन्होंने रूसी पहलवान को एक और बार पटखनी देकर 6-2 से मुकाबला अपने नाम कर लिया। अगले दौर में हालांकि उन्हें आसनी से जीत मिल गयी। उन्होंने अमेरिकी पहलवान को महज 75 सेकेंड में चित कर दिया। इस समय वह मैच में 6-0 से आगे चल रही थी। इससे पहले अंशु मलिक को बुखार के कारण 57 किग्रा के भार वर्ग से टूर्नामेंट से हटना पड़ा था।

■■

इंदौरी ज़ायका

विनीता कुंदनानी

हमारा इंदौर स्वच्छता और मिठास के मामले में एक बहुत ही खूबसूरत शहर है और यहाँ का स्ट्रीट फूड और मिठाइयाँ विश्व विख्यात है। यहाँ पर 'छप्पन दुकान' नाम की एक खास जगह है, जहां पर 56 दुकानें हैं और इन दुकानों पर एक से बढ़कर एक स्ट्रीट फूड मिलता है। इसके अलावा इंदौर का सराफा बाज़ार भी बेहद लोकप्रिय है, जहां की विशेषता यह है कि दिन में ज्वैलरी की दुकानें खुलती हैं और रात में इन दुकानों के बंद हो जाने के बाद यहाँ खुलता है 'स्वाद का खज़ाना'। यह इंदौर की हैपनिंग नाइट लाइफ का जीता-जागता उदाहरण है क्योंकि रात के समय में खाने के शौक़ीनों से जगमग यह मार्केट किसी खास त्यौहार जैसी फील देता है। सब तरफ चकाचौंध, स्ट्रीट फूड की खुशबू, मिठाइयों की सुगंध और लोगों की भीड़ देख कर ऐसा लगता है मानो हर रात खाने का कोई त्यौहार मनाया जा रहा हो।

आइए जानते हैं इंदौर की इन्हीं गलियों की कुछ खास व मशहूर मिठाइयों और बनाने की रेसपी- हीरामणि,

गुलाबजामुन, मक्खन वड़े, महाजलेबी, गीताभवन के रसगुल्ले, गज़क, मरोठिया के पेडे,दूध पाक, नागौरी सिकंजी, खोपरा,मूंग दाल हलवा,दूध पाक, मालपुआ, खोबारा पेटिस, भुट्टे क्रिस, गराडू, इंदौर का पोहा आदि प्रसिद्ध पकवान हैं।

इंदौरी पोहा रेसपी

(एक रिपोर्ट के मुताबिक, इंदौर के थोक बाजार से रोजाना करीब-करीब 65 टन पोहे की बिक्री होती है और 7 जून को इंदौर में विश्व पोहा दिवस बनाया जाता है।)

महत्वपूर्ण सामग्री-

- सदस्य - 2 से 3 मेंबर्स के लिए
- समय... 25-30 मिनट
- 2 कटोरी जाड़ा (मोटा) पोहा
- 1 छोटी चम्मच तेल
- 1 उबला आलू/मटर
- 2 / स्वादनुसार हरी मिर्च बारीक़ कटी हुई
- आवश्यकता अनुसार थोड़े से करी पत्ते
- 2 चुटकी हल्दी पाउडर
- 1/4 छोटी चम्मच सौंफ
- 1/2 छोटी चम्मच चीनी
- स्वादानुसार नमक
- आवश्यकता अनुसार थोड़े सी हरी प्याज़ की पत्तियाँ कटी हुई
- 1/2 नीबू
- आवश्यकता अनुसार थोड़ी सी धनिया पत्ती
- स्वादानुसार जीरा मसाला
- आवश्यकता अनुसार बारीक़ सेव / मसाला सेव
- आवश्यकता अनुसार थोड़े सी बारीक़ कटी हुई हरी प्याज़ (स्प्रींग अनियन) और साधा प्याज़
- आवश्यकता अनुसार अनार दाने थोड़े से

विधि

पहले पोहे को 2-3 बार धो लें। फिर इसे छलनी में रख दें।

- अब मीडियम आंच पर एक कड़ाही में तेल डालकर गरम करें। जब तेल अच्छी तरह गर्म हो जाए तो इसमें राई, सौंफ, साबुत धनिया, करी पत्ता और हींग डालकर तड़काएं।

- जब राई और सौंफ चटकने लगे, तब पैन में प्याज,मटर और हरी मिर्च डालकर प्याज के गुलाबी होने तक भूनें।

- इसके बाद कड़ाही में छलनी में रखा हुआ पोहा डालें। ऊपर से हल्दी पाउडर, नमक और चीनी डालकर कड़छी से अच्छी तरह मिलाएं। - अब कड़ाही को एक प्लेट से ढक कर 2 से 3 मिनट तक मध्यम आंच पर पोहा पकने दें। इसके बाद आंच बंद कर दें।

- पोहे को हल्का नरम बनाने के लिए इसमें थोड़ा-सा पानी छिड़क लें।

- आंच बंद करने के एक मिनट बाद कड़ाही से प्लेट हटाएं।

- 5-7 मिनट बाद गैस बंद करके पोहा को बर्तन यानि कढ़ाई से प्लैट में बाहर निकालें और उसमें नीबू का रस डालें और एक दूसरी बड़ी प्लेट मे पोहा लिजिये उसमें जीरावन मसाला स्वाद नुसार डाले और साथ में प्याज़,बारीक़ सेव,अनार दाने, हरा धनिया पत्ती डाले और सबको अच्छे से मिलायें और ऊपर से मनपसंद ड्राईफ्रूट से गार्निश करके स्वादिस्ट स्टीम इंदौरी पोहा तुरंत गर्म गर्म परोसें।

■■

काशी के अर्जुन ने बनाया विश्व रिकॉर्ड

देश के सबसे छोटे तीरंदाज अर्जुन ने काशी का नाम पूरे दुनिया में रोशन किया है। 6 साल के अर्जुन ने सबसे कम समय में तीरों से शूट करने साथ ही रोलर स्केटिंग पर तीरंदाजी कर सबसे ज्यादा स्कोर हासिल कर गिनेस बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया है। गिनेस बुक में दो नए वर्ल्ड रेकॉर्ड के दर्ज होने के बाद अर्जुन के घर खुशी का माहौल है।अर्जुन ने 6 अगस्त 2020 को एक निजी स्कूल के इनडोर शूटिंग रेंज में तीरंदाजी कर गिनेस बुक में दर्ज अमेरिकी तीरंदाज माइक ट्रोना और आस्ट्रेलिया के जोसेफ मैकग्रेइल के रेकॉर्ड को ब्रेक करने का दावा किया था। एक्सपर्ट की टीम ने दावे के पड़ताल की उसके बाद गिनेस बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड ने अर्जुन के बाद इस दावे पर मुहर लगाई और उसे इसका प्रमाण पत्र जारी किया।अर्जुन ने गिनेस बुक में दर्ज आस्ट्रेलिया के जोसेफ मैकग्रेइल-बेटुप के 17 नवंबर 2019 को 18 मीटर दूरी से 40 सेमी लक्ष्य में 10 तीरों को शूट करने के सबसे तेज समय 1 मिनट 0.03 सेकंड को ब्रेक कर 48.68 सेकंड में 18 मीटर की दूरी से 40 सेमी लक्ष्य के 10 तीरों को शूट किया है। इसके अलावा अर्जुन ने रोलर स्केटिंग पर तीरंदाजी करते हुए सबसे अधिक स्कोर बनाने वाले अमेरिका के माइक ट्रोना के वर्ल्ड रेकॉर्ड को भी ब्रेक किया है। अर्जुन ने रोलर स्केटिंग करते हुए एक मिनट मे 120 मीटर की दूरी तय करते हुए हर 20 मीटर पर रखे हुए पांच 40 सेंटीमीटर के लक्ष्य को भेदकर 32 स्कोर हासिल किए थे।

तमिल हिट 'मास्टर' के हिंदी रीमेक में होगें

सलमान खान

कोरोनावायरस महामारी के कारण सुस्त 2020 के बाद, सलमान खान एक धमाके के साथ वापस आने के लिए तैयार हैं। अभिनेता के पास फिल्मों की एक श्रृंखला है जिसकी शूटिंग वह 2021 अंत में करेंगे। समाचार रिपोर्टों के अनुसार, वह थलपति विजय की फिल्म 'मास्टर' के हिंदी रीमेक में अभिनय करेंगे। तमिल हिट 'मास्टर' के हिंदी रीमेक का निर्माण एंडेमोल शाइन इंडिया और मुराद खेतानी द्वारा सेवन स्क्रीन स्टूडियो के सहयोग से किया जाएगा, जिसने मूल एक्शन का सह-निर्माण और वितरण किया था।

हाल ही में अफवाहें थीं कि सलमान खान को तमिल फिल्म मास्टर के हिंदी रीमेक के लिए संपर्क किया गया है। प्रशंसकों की राहत के लिए बता दें अफवाहें वास्तव में सच हैं। घटनाक्रम से जुड़े एक सूत्र ने मिड-डे को इसकी पुष्टि की। सूत्र ने कहा, 'लोकेश कनगराज द्वारा निर्देशित यह फिल्म इस साल की शुरुआत में कर्फ्यू लागू होने से पहले सलमान को दिखाई गई थी। यह शराबी प्रोफेसर जेडी के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसे विजय द्वारा चित्रित किया गया है, जो एक किशोर गृह में शिक्षण का काम करता है। सलमान फिल्म को करने के लिए उत्साहित थे। फिल्म के बारे में और सैद्धांतिक रूप से इसे करने के लिए सहमत हो गए। लेकिन लॉकडाउन के कारण चीजें तेजी से आगे नहीं बढ़ीं। अब, निर्माता स्क्रिप्ट में मामूली बदलाव, शूटिंग की संभावित तारीखों और निर्देशक पर चर्चा करने के लिए उनसे फिर से मिलेंगे।'

सलमान इन दिनों अपने पनवेल फार्महाउस पर फैमिली टाइम एन्जॉय कर रहे हैं। सूत्र के मुताबिक , 'महीने के अंत तक, वह परिवार के साथ छुट्टी मनाने गोवा जाएंगे। सब कुछ ठीक रहा तो छुट्टी से लौटने के बाद वह अपनी नई रिलीज की घोषणा करेंगे। इस बीच, मास्टर रीमेक के निर्माता एक ए-लिस्ट स्टार की तलाश कर रहे हैं जो विजय सेतुपति की भूमिका को फिर से निभा सके और सलमान के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा हो सके। '

■■

कोरोना का टीका
अवश्य लगवायें!
प्रमोद तिवारी
वरिष्ठ भाजपा नेता
भारतीय जनता पार्टी
जितेंद्र पांडेय
जिला अध्यक्ष भाजयुमो,
जिला महामंत्री भाजपा
कोरोना नियमों का
पालन करें
विशाल तिवारी
सभासद
नगरपालिका परिषद
पं दीनदयाल उपाध्याय नगर
कोरोना से खुद बचें
दूसरों को भी बचायें
आशुतोष मिश्रा
नगर महामंत्री
भारतीय युवा मोर्चा
पं दीनदयाल उपाध्याय नगर
अग्रवाल नर्सिंग होम
अग्रवाल सेवा संस्थान के सामने
जी.टी. रोड नई बस्ती, मुगलसराय
फोको विधि द्वारा आँखों का ऑपरेशन किया जाता है।
स्वामी विवेकानन्द
जनकल्याण हास्पिटल
कृष्ण राधिका कटरा थाना अलीनगर के सामने
अलीनगर, मुगलसराय
डा. जे. पी. यादव

RNI: UPHIN/2017/75716

SACH KI DASTAK

(A MONTHLY HINDI JOURNAL)

C-6/2-M, NEAR CHETGANJ THANA,CHETGANJ, VARANASI

Website : www.sachkidastak.com, E-mail : sachkidastak@gmail.com

Mob. : 8299678756, 9598056904

JUNE, 2021

PRICE : RS. 20/-

EDITOR : BRAJESH KUMAR

NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA

"विद्यार्थियों का गौरव"

स्थापित : 1998

एक्सीलेन्ट बॉयो इन्स्टीच्यूट

कैलाशपुरी, पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर, मुगलसराय, चन्दौली

मो0नं0 : 9621503924, 8299678756, 9598056904

पाठ्यक्रम व्यवस्था : 9, 10, 11, 12, यू.पी. बोर्ड, सी.बी.एस.ई. बोर्ड

मुख्य आकर्षण - 1- Physics व Biology के प्रैक्टिकल की व्यवस्था
2-पढ़ाते समय मे ही कोर्स को याद करवाने की व्यवस्था

ब्रजेश कुमार

Biology व Chemistry

25 वर्षों का पढ़ाने का अनुभव

आर. के. दीक्षित

Physics

30 वर्षों का पढ़ाने का अनुभव

मनोज उपाध्याय

Math

15 वर्षों का पढ़ाने का अनुभव

कोरोना का टीका अवश्य लगवायें! कोरोना का टीका अवश्य लगवायें!

डॉ लक्ष्मी शंकर यादव

जेनरल फिजिशियन

नक्षत्र लॉन के अलीनगर

जी टी रोड मुगलसराय